हिन्दी सांध्य दैनिक

प्रखर पूर्वांचल

अखबार नहीं आंदोलन

RNI:UPHIN/2016/68754 www.prakharpurvanchal.com Email ID: prakharpurvanchal@gmail.com

गाजीपुर से प्रकाशित व वाराणसी, चंदौली, सोनभद्र, मऊ, बलिया, आजमगढ़, भदोही, मिर्जापुर, जौनपुर, लखनऊ, प्रयागराज, गोरखपुर, कुशीनगर, महाराजगंज तथा देवरिया से प्रसारित

वर्षः 6, अंकः 9, पृष्ठ 4, मूल्य 3.00, आमंत्रण मूल्य 2.00 23 जून, 2021 दिन बुधवार गाजीपुर/वाराणसी

भारत में रोकी जा सकती है कोरोना की तीसरी लहर

नीति आयोग के सदस्य ने बताया उपाय

नई दिल्ली। नीति आयोग के सदस्य (स्वास्थ्य) वी के पॉल ने मंगलवार को कहा कि कोरोना महामारी की तीसरी लहर को रोकना हमारे हाथ में हैं। उन्होंने कहा कि अगर हम कोविड से बचने के लिए जारी दिशा-निदेर्शों का पालने करें और सभी अपना टीकाकरण करवा लें तो तीसरी लहर को आने से रोका जा सकता है। बता दें कि सोमवार से देश में वैक्सीनेशन महाभियान की शुरूआत हो गई है। कल का दिन भारत के टीकाकरण अभियान के लिए ऐतिहासिक रहा। कल एक दिन में वैक्सीन की 86.16 लाख से अधिक डोज दी गईं। इस पर पॉल ने कहा कि एक दिन का यह आंकड़ा दिखाता है कि देश में टीकाकरण अभियान आने वाले दिनों और हफ्तों में बड़े पैमाने पर पहुंच जाएगा।

बता दें कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 21 जून से नई वैक्सीन नीति को लागू कर दिया और देश में वैक्सीन की मुफ्त खुराक देने का ऐलान किया। इसके तहत केंद्र सरकार वैक्सीन खरीदेगी और राज्य सरकारों को मुहैया कराएगी। 18 साल से ज्यादा उम्र के सभी लोग किसी भी वैक्सीनेशन सेंटर पर जाकर डोज ले

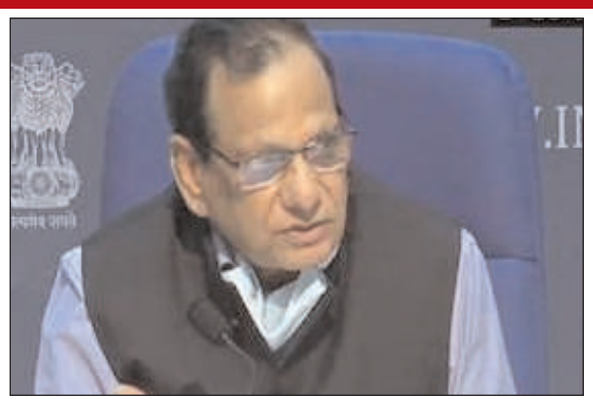

सकते हैं। स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के एक बयान में पॉल के हवाले से कहा गया है, 'यह सब केंद्र और राज्य सरकारों के बीच योजना और समन्वय के कारण संभव हुआ है।' पॉल ने कहा, 'तीसरी लहर आती है या नहीं यह हमारे हाथ में है। अगर हम कोविड दिशा-निदेर्शों का पालन करते हैं और खुद को टीका लगवाते हैं तो तीसरी लहर क्यों आएगी। कई देश ऐसे हैं जहां दूसरी लहर भी नहीं आई है। यदि हम इन सभी बातों का ध्यान रखते हैं तो यह समय भी बीत जाएगा।' वीके पॉल ने अर्थव्यवस्था और सामान्य काम फिर से शुरू करने के लिए देश को सक्षम बनाने के लिए तेजी से टीकाकरण के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि सामाजिक जीवन को बनाए रखना, स्कूल खोलना, व्यवसाय खोलना, हमारी अर्थव्यवस्था की देखभाल तभी हो पाएगी जब तेज गति से टीकाकरण होगा और नागरिक इसमें सहयोग करेंगे। उन्होंने कोरोना वैक्सीन को लेकर फैल रही अफवाहों को खारिज करते हुए कहा कि यह सोचना एक बड़ी गलती है कि हमारे टीके असुरक्षित हैं। दुनिया के सभी टीकों की तरह हमारे टीकों को भी आपातकालीन उपयोग प्राधिकरण के तहत अप्रूव किया गया है।

बिना फायर एनओसी चल रहा था गोदाम, चार मजदूर लापता

नई दिल्ली। उद्योग नगर औद्योगिक क्षेत्र स्थित जूतों के दो मंजिला गोदाम में सोमवार सुबह करीब 8.40 बजे अचानक आग लग गई। देखते ही देखते आग ने विकराल रूप धारण कर लिया। कुछ मजदूर समय रहते बाहर निकल गए और पुलिस व दमकल विभाग को सूचना दी, जबकि कइयों ने ऊपर की मंजिल से छलांग लगाकर जान बचाईं। चार मजदूरों का शाम तक पता नहीं चला। एनडीआरएफ दस्ते के साथ दमकल की 35 गाड़ियों ने करीब दस घंटे बाद शाम 7 बजे आग पर काबू पा लिया गया। हालांकि गोदाम के कुछ हिस्सों में कूलिंग का काम चल रहा था। मंगलवार सुबह लापता मजदूरों की तलाशी अभियान चलाया जाएगा। पुलिस ने गोदाम मालिक पंकज गर्ग के खिलाफ गैर इरादतन हत्या का मामला दर्ज कर लिया है। शुरूआती जांच में शार्ट सर्किट से आग लगने की बात सामने आई है।

दिल्ली में पानी के लिए हाहाकर मचना शुरू हुआ, लोग ट्वीट कर मांग रहे निजात

नई दिल्ली। उत्तराखंड में भारी बारिश होने पर गंगा एवं यमुना नदी में बाढ़ आने के कारण राजधानी में पेयजल के लिए हाहाकर मचने लग गया है। कई इलाकों में पेयजल आपूर्ति नहीं आने पर लोग दिल्ली जल बोर्ड को ट्वीट कर अपनी दिक्कत की सूचना देने के साथ-साथ उसका समाधान करने का आग्रह कर रहे हैं। दरअसल यमुना नदी एवं गंग नहर से जुड़े पांच जल शोधक संयंत्रों में पानी के उत्पादन में निरंतर गिरावट आ रही है। इस कारण उनसे जुड़े इलाकों के लोगों को पेयजल संकट का सामना करना पड़ रहा है। हालांकि जल बोर्ड ने दावा किया है कि यमुना नदी एवं गंग नहर के पानी में गाद की मात्रा बढ़ने के बावजूद स्थिति नियंत्रण में है और उसके संयंत्र पूरी क्षमता से चल रहे है। उत्तराखंड में भारी बारिश होने के कारण गंगा व यमुना समेत सभी नदियों में बाढ़ आई हुई है। इतना ही नहीं, सभी नदियों के पानी में गाद की मात्रा काफी बढ़ गई है। इस कारण हरिद्वार में तीन दिन से गंग नहर में पानी छोड़ना बंद कर रखा है और इस नहर से जुड़े दिल्ली जल बोर्ड के सोनिया विहार एवं भगीरथी जल शोधक संयंत्र में पानी आना कम हो गया है। अगले दो-तीन दिन के बाद इनको गंग नहर से पूरी तरह पानी मिलना बंद हो जाएगा।

सियासी मंथन के बीच डिप्टी सीएम मौर्य के घर पहुंचे सीएम योगी, सियासी गलियारे में हलचल

लखनऊ। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ से बड़ी खबर है। प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ साढ़े चार साल में पहली बार उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य के घर पहुंचे और उनके साथ दोपहर का भोजन किया। मुख्यमंत्री के साथ राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सह सर कार्यवाह कृष्णगोपाल, महामंत्री संगठन बीएल संतोष सहित कोर कमेटी के सदस्य भी मौजूद रहे। बताया जा रहा है कि योगी डिप्टी सीएम केशव मौर्य को बेटे की शादी की बधाई देने के लिए पहुंचे थे।

दरअसल, उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य के घर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के भोजन के राजनीतिक मायने भी निकाले जा रहे हैं। इस विजिट से मुख्यमंत्री योगी सरकार व संगठन में एकता का संदेश देना चाहते हैं। बता दें कि बीते दिनों केशव मौर्य ने बयान दिया था कि यूपी में मुख्यमंत्री का फैसला चुनाव के बाद तय किया जाएगा जिस पर राजनीतिक चचाओं का दौर शुरू हो गया था और पार्टी नेतृत्व के मुद्दे पर बंटी नजर आ रही थी। इस दौरे से योगी ने पार्टी में एकता का संदेश दिया है। इसके पहले, सोमवार को पूर्व नौकरशाह अरविंद कुमार शर्मा ने भी भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष स्वतंत्र देव सिंह को पत्र लिखकर उपाध्यक्ष बनाने के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया था। पत्र में उन्होंने संदेश दिया था कि यूपी का चुनाव 2022 में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में ही लड़ा जाएगा। उन्होंने कहा था कि योगी जी के नेतृत्व में भाजपा 2017 से भी बड़ी सफलता इस बार के चुनाव में दर्ज करेगी। मुख्यमंत्री योगी के उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य के घर जाने को लेकर कहा जा रहा है कि सरकार की तरफ से आल इज वेल का संदेश देने का प्रयास किया जा रहा है। बता दें कि भाजपा यूपी के चुनाव को लेकर बड़ी शिद्दत से रणनीति बनाने में जुट गई है। पार्टी जुलाई से पूरी तैयारी के साथ चुनावी मैदान में कूदने की तैयारी कर रही है। इसके पहले सोमवार शाम मुख्यमंत्री आवास पर करीब साढ़े तीन घंटे तक चली भाजपा कोर कमेटी की बैठक में विधानसभा चुनाव की रणनीति पर मंथन किया गया और यह निर्णय लिया गया कि भाजपा आगामी विधानसभा चुनाव में केंद्र की मोदी और प्रदेश की योगी सरकार के विकास कार्यों और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद से जुड़े कामों के सहारे चुनाव मैदान में उतरेगी। बैठक में आरएसएस के सह-सरकार्यवाह कृष्ण गोपाल और भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री (संगठन) बीएल संतोष के सामने कमेटी के सदस्यों ने चुनावी रणनीति को लेकर सुझाव रखे। वहीं, मुख्यमंत्री ने सुझावों पर पक्ष रखते हुए अपनी सरकार की साढ़े चार साल की प्रमुख उपलब्धियों को कमेटी के सामने रखा। बैठक में सरकार के सेवा सरोकारों के साथ राष्ट्रवाद से जुड़े मुद्दों को जनता के बीच लेकर जाने की रणनीति पर चर्चा हुई। वहीं पश्चिम में किसानों से जुड़ी समस्याओं का समाधान कर उनकी नाराजगी दूर करने, पिछड़े व अति पिछड़े वोट बैंक को साधने के लिए आगामी दिनों में कार्यक्रम आयोजित करने पर भी चर्चा हुई।

फारूक अब्दुल्ला बोलेः सर्वदलीय बैठक में हम सब जाएंगे महबूबा की दो टूक- जो छीना गया उसी पर होगी बात

जम्मू। दिल्ली में सर्वदलीय बैठक से पहले मंगलवार को गुपकार गठबंधन के नेताओं की बैठक हुई। इसमें सर्वदलीय बैठक को लेकर

रणनीति तैयार की गई। पूर्व मुख्यमंत्री फारूक अब्दुल्ला ने अपने आवास पर पीपुल्स अलायंस फॉर गुपकार डिक्लेरेशन (पीएजीडी) की बैठक की अध्यक्षता की। इसके बाद वह पत्रकारों से रूबरू हुए। फारूक अब्दुल्ला ने कहा कि सर्वदलीय बैठक में नेशनल कांफ्रेंस, पीडीपी समेत वह सभी दल शामिल होंगे, जिन्हें न्योता मिला है। हमें कोई एजेंडा नहीं दिया गया है, इसलिए प्रधानमंत्री और गृहमंत्री के सामने हम अपना पक्ष रखेंगे। पीडीपी मुखिया महबूबा मुफ्ती ने कहा कि हमसे जो छीन लिया गया है, हम उसके बारे में बात करेंगे। महबूबा का इशारा अनुच्छेद-370 की तरफ था। इसके साथ वहीद पारा का नाम लिए बगैर उन्होंने कहा कि राजनीतिक बंदियों को रिहा किया जाना चाहिए। वह कैदियों की रिहाई पर जोर देंगी।

बैठक में पहुंचे पीएजीडी सदस्य मुजफ्फर शाह ने कहा कि हम पीएम की ओर से बुलाई गई बैठक और उसके एजेंडे पर फैसला करेंगे। हम अनुच्छेद-370 और 35-ए के बारे में भी बात करेंगे। बता दें कि अब्दुल्ला पीएम मोदी की बैठक के लिए आमंत्रित 14 नेताओं में शामिल हैं। वह पार्टी के वरिष्ठ नेताओं के साथ केंद्र के साथ इस तरह की पहली बातचीत पर विचार-विमर्श कर रहे हैं। केंद्रीय गृह सचिव अजय भल्ला बैठक को लेकर पूरी स्थिति पर नजर बनाए हुए हैं। वे प्रस्तावित बैठक को लेकर जम्मू और कश्मीर में चल रही राजनीतिक घटनाक्रम की पल-पल की जानकारी हासिल कर रहे हैं। बीते दो दिनों से कश्मीर में सियासी सरगर्मी तेज है। पीडीपी की राजनीतिक मामलों की समिति ने महबूबा मुफ्ती को फैसला लेने के लिए अधिकृत किया है तो नेकां प्रमुख दो दिनों से पार्टी सांसदों व नेताओं से विचार-विमर्श कर रहे हैं।

आतंकी हमलाः डाउनटाउन में सुरक्षाबलों की संयुक्त टीम पर आतंकियों ने फेंका ग्रेनेड, हमलावरों की तलाश जारी

जम्मू। कश्मीर के डाउनटाउन में आतंकियों ने सुरक्षाबलों पर हमला किया है। हमले के बाद आतंकी फरार हो गए। हमलावरों की तलाश में इलाके की घेराबंदी कर अभियान शुरू किया गया है। हालांकि इस हमले में अभी तक किसी प्रकार के नुकसान की सूचना नहीं है। बता दें कि डाउनटाउन के खानयार इलाके में सुरक्षाबलों की टीम तैनात थी। जिसको निशाना बनाकर आतंकियों ने ग्रेनेड फेंका। गौरतलब है कि कश्मीर घाटी में आतंकवाद के खात्मे के लिए सुरक्षाबलों की ओर से ऑपरेशन चलाए जा रहे हैं। इसी के चलते आतंकी संगठन बौखलाए हुए हैं। सुरक्षाबलों और स्थानीय नागिरकों को निशाना बनाकर आतंकी घाटी में अशांति फैलाना चाहते हैं।

ध्वस्त होता आतंकी नेटवर्क- सतर्कता और सटीक इनपुट के चलते आतंकियों के खिलाफ सुरक्षाबलों को कामयाबी मिल रही है। सभी बलों के बीच बेहतर तालमेल भी इसकी अहम वजह है। इसी के चलते आतंकी संगठनों की कश्मीर में कमर टूट चुकी है। आतंकी संगठनों के कई बड़े कमांडर मारे जा चुके हैं। आतंकियों की भर्ती में भारी कमी आई है। उधर, आतंकवादी हथियारों की कमी से भी जूझ रहे हैं।

पंजाब में थमी रार : कैप्टन नहीं बनाएंगे अलग पार्टी, कांग्रेस में सिद्धू को सही भूमिका देकर असंतोष संभालने की कोशिश

नई दिल्ली। पंजाब के मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह द्वारा कांग्रेस से अलग होकर अपनी नई पार्टी बनाने की कोई संभावना नहीं है। वे मंगलवार को पार्टी की तीन सदस्यीय कमेटी के सामने पेश होकर नवजोत सिंह सिद्धू से चल रहे विवाद पर अपनी बात रखेंगे। इस बातचीत के दौरान पार्टी नेता नवजोत सिंह सिद्धू को पार्टी और सरकार में उचित भूमिका देने पर अमरिंदर सिंह को सहमत कर दोनों के बीच संतुलन साधने की कोशिश करेंगे। लेकिन यह विवाद किसी भी कीमत पर पार्टी से अलग होने की राह पर नहीं जाएगा। इसके बाद वे पार्टी की अंतरिम अध्यक्ष सोनिया गांधी से भी मुलाकात करेंगे।

कैप्टन अमरिंदर सिंह गुट के एक मंत्री और पंजाब कांग्रेस में एक वरिष्ठ नेता ने अमर उजाला से कहा कि दोनों वरिष्ठ नेताओं में अपनी-अपनी भूमिका को लेकर कुछ मतभेद अवश्य हैं। इस पर पार्टी आलाकमान से अपनी बात रखने के लिए ही कैप्टन अमरिंदर सिंह पार्टी के केंद्रीय नेताओं से मुलाकात कर रहे हैं। उन्होंने उम्मीद जाहिर की कि पंजाब विधानसभा चुनाव की तैयारियों को देखते हुए यह मुद्दा जल्दी ही सुलझा लिया जाएगा, जिससे सभी नेता चुनाव में अपनी-अपनी भूमिका का निर्वहन करते हुए पार्टी की जीत सुनिश्चित कर सकें। इस तरह की चर्चा हो रही है कि अगर नवजोत सिंह सिद्धू की भूमिका को लेकर केंद्रीय नेतृत्व से ज्यादा दबाव डाला गया तो कैप्टन अमरिंदर सिंह कांग्रेस से अलग होकर नई पार्टी बनाकर चुनाव में जा सकते हैं? अमर उजाला के इस सवाल पर कांग्रेस नेता ने कहा कि यह केवल कोरी अफवाह है और इसमें दूर-दूर तक कोई संभावना नहीं है। कैप्टन साहब न केवल कांग्रेस के दिग्गज नेता रहे हैं, बल्कि वे गांधी परिवार के बेहद करीबे और विश्वासपात्र रहे हैं। इस बात की कोई संभावना नहीं है कि वे कांग्रेस से अलग होकर कोई अलग रास्ता अपनाएंगे। नेता ने कहा कि वे पार्टी के अंदर ही रहकर अपनी बात मजबूती से उठाएंगे।

बांदा में पानी की टंकी पर चढ़ी महिला का हाईवोल्टेज ड्रामा, कूदने की धमकी पर सहमे रहे अफसर

बांदा। कचहरी परिसर में मंगलवार की सुबह उस समय अफरातफरी मच गई, जब एक महिला पानी की टंकी पर चढ़कर नीचे कूदने की धमकी देने लगी। उसका शोर सुनकर वकील, वादकारी और तमाशबीनों की भीड़ जुट गई। समझाने के बावजूद उसका हाईवोल्टेज ड्रामा चलता रहा और वह अफसरों को बुलाने की जिद पर अड़ गई। मौके पर पहुंचे नगर मजिस्ट्रेट, सीओ और कोतवाल उसे टंकी पर चढ़ा देखकर समझाने का प्रयास करने लगे लेकिन वह नहीं मानी। उसके कूदने की धमकी पर नीचे खड़े अफसर सहमे रहे और उसे समझाते रहे। बाद में किसी तरह एक युवक ऊपर तक पहुंचा और नीचे उतार कर लाया। महिला को कोतवाली में रखा गया है। कमासिन थाने के सामने सब्जी की दुकान लगाने वाली नीलम यादव मंगलवार की सुबह कचहरी परिसर स्थित पानी की टंकी पर चढ़ गई। ऊपर से कूदने की धमकी देकर वह चिल्लाने लगी। टंकी के नीचे जुटी भीड़ उसे नीचे उतरने के लिए समझाती रही लेकिन वह नहीं मानी। नगर मजिस्ट्रेट, सीओ राकेश कुमार व कोतवाल भाष्कर मिश्रा फोर्स के साथ पहुंचे। अधिकारी उससे कारण पूछते रहे लेकिन

उसकी आवाज नीचे तक ठीक से न आने की बात कहते रहे। इस बीच करीब एक घंटे तक महिला का हाईवोल्टे ड्रामा चलता रहा। अधिकारियों ने मोबाइल से बातचीत करने की बात कही और एक युवक को ऊपर भेजने को कहा। इसपर महिला राजी हो गई और फिर टंकी पर चढ़कर युवक ने मोबाइल देने के बहाने उसे पकड़ लिया। इसके बाद बमुश्किल महिला को नीचे उतारा जा सका।

बंगाल में ममता दीदी का सूबे में सियासी हिंसा से इन्कार और हाईकोर्ट की फटकार

कोलकाता। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी बंगाल में विधानसभा चुनाव बाद हिंसा से साफ इन्कार करती रही हैं। बीते गुरुवार को भी उन्होंने केंद्र, भाजपा और राज्यपाल जगदीप धनखड़ की ओर से लगाए गए हिंसा के आरोपों को खारिज करते हुए उन पर ही निशाना साधा था। ममता ने साफ कहा था कि छिटपुट घटनाओं को छोड़कर सूबे में सियासी हिंसा की कोई वारदात नहीं हो रही। ऐसा लगता है कि उनकी आंखों में पीलिया है। जैसे पीलिया होने पर सबकुछ पीला दिखता है, उसी तरह उन लोगों को बंगाल में हर तरफ हिंसा दिख रही है। बहरहाल सच्चाई से अधिक देर तक मुंह नहीं मोड़ा जा सकता, यह बात एक दिन बाद ही कलकत्ता हाई कोर्ट में प्रमाणित हो गई। हिंसा से इन्कार पर हाई कोर्ट की मुख्य न्यायाधीश की अध्यक्षता वाली पांच जजों की पीठ से ममता सरकार को सिर्फ कड़ी फटकार ही नहीं मिली, बल्कि राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग (एनएचआरसी) को समिति गठित कर जांच करने का भी निर्देश दे दिया गया। इससे साफ हो गया कि सूबे में चुनाव बाद हिंसा हुई है। ऐसे में यह सवाल उठ रहा है कि आखिर मुख्यमंत्री ने पहले सूबे में सियासी हिंसा होने से क्यों इन्कार किया? इसके बाद जब एनएचआरसी को समिति गठित कर जांच करने को कहा गया तो इसका विरोध

क्यों किया जा रहा है? अगर राज्य में हिंसा नहीं हुई है तो फिर कोर्ट के निर्देश पर पुनर्विचार की मांग क्यों? इन सब बातों का सीधा अर्थ निकल रहा है कि हिंसा हुई है। क्योंकि पिछले सप्ताह ही भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष दिलीप घोष ने कहा था कि चुनाव बाद हिंसा में अब तक उनके 42 पार्टी कार्यकताओं की हत्या हो चुकी है और हजारों लोग भय से घर छोड़ने को मजबूर हैं। ये सभी घटनाएं स्पष्ट रूप से हिंसा के आरोपों को ही प्रमाणित कर रही हैं। इसके अलावा 18 जून को हाई कोर्ट की वृहतर पीठ का निर्देश आने से चार दिन पहले राज्यपाल ने मुख्यमंत्री को पत्र लिखकर कहा था कि राज्य सरकार चुनाव बाद की हिंसा से लोगों को हुई पीड़ा को लेकर निष्क्रिय और उदासीन रही है। इसके बाद हाई कोर्ट के कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश राजेश बिंदल, न्यायमूर्ति आइपी मुखर्जी, हरीश टंडन, सोमेन सेन और सुब्रत तालुकदार की पांच सदस्यीय पीठ ने साफ कहा कि चुनाव के बाद हुई हिंसा के कारण राज्य के तमाम लोगों का जीवन और संपत्ति खतरे में होने का आरोप है। ऐसे हालात में राज्य को अपनी पसंद के अनुसार काम करने की अनुमति नहीं दी जा सकती। राज्य सरकार को यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि कानून व्यवस्था को बनाए रखना और लोगों में विश्वास पैदा करना उसका कर्तव्य है। लोगों की शिकायतों पर तत्काल कार्रवाई की जानी चाहिए। हमले की आशंका से ही लोग अपने घरों को लौटने से डर रहे हैं।

न शिक्षक न विद्यार्थी मंगा ली करोड़ों की किताब

आरटीआई देने में कर रहे आनाकानी, जननायक चंद्रशेखर विश्वविद्यालय बलिया का मामला

प्रखर वाराणसी। समाजवादी पार्टी की अखिलेश यादव सरकार में देश के कद्दावर नेता रहे स्वर्गीय चंद्रशेखर की स्मृति में बलिया में जननायक चंद्रशेखर विश्वविद्यालय की स्थापना की गई। बता दें कि विश्वविद्यालय की स्थापना के साथ ही यहां विवाद भी शुरू हो गया । ताजा मामला विश्वविद्यालय में एक ऐसे विषय के लिए किताबों की खरीद-फरोख्त का सामने आया है । जहां पुस्तकों की खरीद के समय तक न तो शिक्षक थे ना ही विद्यार्थी । बता दें कि इस विषय पर जब आरटीआई संबंधित जन सूचना अधिकारी से मांगी गई तो उसके क्रियाकलाप से यह साफ हो गया है कि मामला संदिग्ध है। पहले तो सूचना अधिकारी ने इस संबंध में कोई जानकारी उपलब्ध नहीं कराया। पुनः शिकायत करने के बाद जन सूचना अधिकारी द्वारा बताया गया कि आरटीआई उसे प्राप्त ही नहीं हुई है । जबकि इस विषय में जब प्रथम अपीलीय अधिकारी से शिकायत की गई तो वही जन सूचना अधिकारी जवाब देते हुए लिखता है कि मांगी गई जन सूचना में शुल्क सम्मिलित नहीं था । लिहाजा उसने सूचना आरटीआई कार्यकर्ता को नहीं दी है। अब बड़ा सवाल यह है कि सूचना अधिकारी दो अलग-अलग बातें क्यों कर रहा है। बता दें कि तत्कालीन कुलपति के समय यह खरीद-फरोख्त किया गया है। विश्वविद्यालय के जन सूचना अधिकारी द्वारा इस तरह का रवैया बड़े घोटाले की तरफ इशारा कर रहा है।

चिंतन मनन

आंदोलन का रुख

दिल्ली के सिंघू बॉर्डर से लेकर टीकरी बॉर्डर और यहां तक कि गाजीपुर बॉर्डर पर भी किसानों का जमावड़ा अब भी है। कभी टेंट बढ़ते तो कभी घटते हैं, कभी ट्रैक्टरों की संख्या बढ़ जाती तो कभी घट जाती है, किसानों की तादाद भी घटती-बढ़ती रहती है, आंदोलन की रूपरेखा भी काफी कुछ बदल गई, लेकिन एक बात जो नहीं बदली, वो है किसानों का रुख, जो अब भी कहते हैं कि जब तक उनकी मांगें मानी नहीं जाती, तब तक वो बॉर्डर खाली नहीं करेंगे। पिछले माह जब केंद्र सरकार ने एमएसपी में बढ़ोतरी की थी, तो लगा था कि किसान आंदोलन का रास्ता छोड़ेंगे और नए कानूनों पर भरोसा जताएंगे, मगर ऐसा कुछ नहीं हुआ। आंदोलन का दिन लगातार बढ़ता जा रहा है और सहमति की गुंजाइश उसी तरह खत्म होती जा रही है। आंदोलन का समाधान क्या हो, यह बहस का विषय जरूर है। यह अपने आप में विचित्र है कि एक ओर किसान अपनी मांगों को लेकर आज भी मोर्चे पर डटे हैं, दूसरी ओर सरकार ने इस मसले पर जो रुख अख्तियार किया हुआ है, वह समस्या के किसी ठोस हल तक पहुंचने का रास्ता नहीं लगता। सवाल है कि किसान जिन सवालों को केंद्र में रख कर आंदोलन कर रहे हैं, क्या वह सही है। दरअसल, किसानों की एक सबसे अहम मांग यह है कि सरकार न्यूनतम समर्थन मूल्य की गारंटी देने को लेकर एक विशेष कानून बनाए। इस लिहाज से सरकार कह सकती है कि उसने खरीफ फसलों पर न्यूनतम समर्थन मूल्यों में बढ़ोतरी करके किसानों के हित में ठोस कदम उठाया है और ऐसा करके उसने आंदोलन कर रहे किसानों को सकारात्मक संदेश देने की कोशिश की है। यह गौरतलब है कि फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य में वृद्धि की घोषणा हर साल का एक नियमित अभ्यास रहा है। इसके तहत साल भर में दो बार फसलों पर इस तरह के समर्थन मूल्य में इजाफे की घोषणा होती है। हालत यह है कि पिछले कई महीने से सरकार और किसान आंदोलन के प्रतिनिधियों के बीच बातचीत का दौर तक बंद है। इसके बावजूद किसान तीनों नए कृषि कानूनों को खत्म करने और न्यूनतम समर्थन मूल्य की गारंटी सुनिश्चित करने वाले कानून की अपनी मांग पर कायम हैं। यों करीब चार महीने के बाद अब सरकार को एक बार फिर ऐसा लगने लगा है कि किसानों से वार्ता शुरू होनी चाहिए तो इससे थोड़ी उम्मीद जरूर बंधती है। लेकिन केंद्रीय कृषि मंत्री की ओर से आए इस बयान में जिस तरह शर्त आधारित बातचीत शुरू करने के संकेत मिलते हैं, उससे साफ है कि इस मसले पर किसी हल तक पहुंचने में शायद वक्त लगे। दरअसल, पिछले सात महीने के दौरान सरकार अक्सर यह कहती रही है कि किसानों को आंदोलन की मांगों को लेकर तार्किक आधार पर बात करनी चाहिए। सवाल है कि अब तक सरकार की ओर से ऐसे तर्क क्यों नहीं रखे गए हैं, जो किसानों को सहमत कर दे और वे अपना आंदोलन वापस ले लें। जाहिर है, तीनों नए कृषि कानूनों के साथ-साथ न्यूनतम समर्थन मूल्य की गारंटी देने वाला कानून बनाने के मुद्दे पर सरकार ने ऐसा कोई प्रस्ताव सामने नहीं रखा है, जिस पर किसान अपनी मांगों के संदर्भ में विचार करने पर तैयार हों। हालांकि केंद्रीय कृषि मंत्री के लगातार दूसरी बार संकेत के जरिए सरकार यह दशार्ना चाहती है कि वह इस मसले पर गंभीर है। लेकिन धान सहित खरीफ फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य में ताजा बढ़ोतरी को किसान आंदोलन की मांगों के प्रति सरकार के रुख में लचीलेपन के तौर पर देखना शायद जल्दबाजी होगी।

है सबका अधिकार!

अपने-अपने धर्म चलें ।
है सबका अधिकार ।।
पर जबरन प्रवेश ।
है फिर तो धिक्कार ।।
अपने मन का मालिक ।
और स्वयं की इच्छा ।।
जबरदस्ती ठीक नहीं ।
हो कोई भी दीक्षा ।।
गुनहगार जो मिल रहे ।
कड़ी सबक सिखाना ।।
मकसद यदि जहरीले ।
वादा फिर निभाना ।।
शांति और सद्भाव का ।
रहे हमेशा ध्यान ।।
उठे न कोई उंगली ।
संज्ञा जो महान ।।

-कृष्णेन्द्र राय

असली मकसद जमीन घोटाला नहीं श्रीराम जन्मभूमि पर श्रीराम मंदिर का विरोध करना है

भाजपा ने राम मंदिर निर्माण का अपना बड़ा वादा पूरा किया है और योजना के अनुसार 2024 से पहले अयोध्या में श्रीरामजन्मभूमि पर भव्य श्रीराम मंदिर बन भी जायेगा। जाहिर-सी बात है कि इसका राजनीतिक लाभ भाजपा को मिलेगा ही। इसके साथ ही छह-सात महीने बाद जब उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव होंगे तब भी भाजपा राम मंदिर बनाने का अपना वादा पूरा करने की बात मतदाताओं को याद दिलायेगी, ऐसे में इस मुद्दे का भाजपा को जरा-सा भी राजनीतिक लाभ नहीं हो इसलिए इस तरह के आरोप गढ़ दिये गये हैं। इसके साथ ही देश में कुछ ऐसी ताकतें भी सक्रिय हैं जोकि नहीं चाहतीं कि देश में चल रही बड़ी योजनाएं साकार हों। यह ताकतें नहीं चाहतीं कि देश में सैंकड़ों वर्षों तक अनसुलझे रहे मुद्दे कभी सुलझें। इसलिए कभी सेंट्रल विस्टा के निर्माण की राह में बाधाएं खड़ी करने के प्रयास किये जाते हैं तो कभी श्रीराम मंदिर निर्माण से जुड़े ट्रस्ट को संदेह के घेरे में लाकर मंदिर निर्माण की राह में बाधा खड़ी करने का प्रयास किया जाता है। आरोप लगाने वालों की माँग है कि इस मामले की सीबीआई और ईडी से जाँच हो और एजेंसियां भूमि खरीद के सभी मामलों के साथ ही जनता से मिले चंदे की राशि का भी ऑडिट करें। यानि आरोप लगाने वालों की चाहत है कि मंदिर निर्माण पर स्थगन लग जाये और चुनावों तक जाँच ही चलती रहे और जिससे कि भाजपा को नहीं उन्हें इस मुद्दे का राजनीतिक लाभ मिल जाये।

इसे सभी समझ सकते है कि राम मंदिर निर्माण को लटकाने, भटकाने के लिए उत्तर प्रदेश से लेकर देश की राजधानी दिल्ली तक प्रभु श्री राम के खिलाफ षड़यंत्र होने लगा और एक बार फिर राम मंदिर निर्माण में रोड़ा अटकाने का राम शुरू हो गया। राम मंदिर निर्माण में एक बार फिर अड़चन डालने की कोशिश की जा रही है।

समाजवादी पार्टी और आम आदमी पार्टी ने अयोध्या में श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र पर जमीन खरीद में घोटाले का आरोप लगा दिया है। समाजवादी पार्टी के नेता तेज नारायण पांडेय उर्फ पवन पांडेय का आरोप है कि दो करोड़ की जमीन को 18 करोड़ 50 लाख रुपए में खरीदा गया। आरोप है लगाया गया कि जिस जमीन को 2 करोड़ रुपए में खरीदा गया उसे महज 10 मिनट के अंदर 18 करोड़ में श्री राम जन्मभूमि ट्रस्ट को बेच दिया गया। समाजवादी पार्टी और आम आदमी पार्टी ने इसकी सीबीआई और ईडी से जांच कराने की मांग की है। इन आरोपों पर ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय ने कहा है कि ये निराधार है और वोट बैंक के लिए सबकुछ किया जा रहा है।

दरअसल इस मामले का दूसरा एंगल यह है कि उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव लड़ने के लिए आम आदमी पार्टी काफी समय से मेहनत कर रही है। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल और उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया उत्तर प्रदेश का दौरा भी कर चुके हैं। सिसोदिया लखनऊ आकर राज्य सरकार के मंत्रियों को अपनी उपलब्धियां बताने की चुनौती दे गये तो केजरीवाल ने किसानों के समर्थन में पश्चिमी उत्तर प्रदेश में रैलियां कीं। हालिया पंचायत चुनावों में भी आम आदमी पार्टी को ठीकठाक सफलता मिली है। इस सबसे उत्साहित आम आदमी पार्टी का प्रयास है कि विधानसभा चुनावों में अपनी शक्ति बढ़ाई जाये, इसके लिए उसे किसी ऐसे मुद्दे की तलाश है जो उसे तो फायदा पहुँचाए ही साथ ही भाजपा को बड़ा नुकसान भी पहुँचाये। साथ ही जनता को यह भी लगे कि सपा, बसपा या कांग्रेस से ज्यादा अच्छी विपक्ष की भूमिका तो आम आदमी पार्टी निभा रही है। इसीलिए काफी खोजबीन कर एक ऐसा मामला गढ़ा गया जो प्रथम दृष्टया ही निराधार नजर आता है। अगर आम आदमी पार्टी के लोगों को लगता है कि भूमि खरीद में कुछ अनियमितता हुई है तो जाँच की माँग ही क्यों की जा रही है, मामला दर्ज कराने की पहल क्यों नहीं की जा रही? जहाँ तक आप नेता संजय सिंह की बात है तो वह वही शख्स हैं जिन्होंने उत्तर प्रदेश के अधिकारियों के संबंध में कथित रूप से विवादास्पद टिप्पणी कर बखेड़ा खड़ा किया था और उनके खिलाफ पुलिस में मामला भी दर्ज है।

आप जरा ट्रस्ट पर लगाये गये आरोप के बाद से विपक्ष की एकजुटता और चेहरे की खुशी तो देखिये। कैसे एक-एक कर सबने हमला बोल दिया है। कांग्रेस, शिवसेना, आम आदमी पार्टी, समाजवादी पार्टी सहित तमाम विपक्षी दलों ने भाजपा और संघ परिवार के खिलाफ अपनी-अपनी राजनीतिक तलवारें म्यान से बाहर निकाल ली हैं। दरअसल सभी दल जानते हैं कि दिल्ली की गद्दी का रास्ता उत्तर प्रदेश होते हुए जाता है इसीलिए भाजपा को उत्तर प्रदेश की सत्ता में आने से रोकने के लिए अभी इससे भी बड़े हथकंडे अपनाये जाएंगे। विपक्ष का आरोप है कि दो करोड़ रुपए की जमीन दस मिनट में साढ़े 18 करोड़ रुपए की कर दी गयी। तो इस बारे में उन्हें पता होना चाहिए कि दो करोड़ रुपए वाली रजिस्ट्री 4 साल पहले हुए एग्रीमेंट पर आधारित थी। राम मंदिर विवाद पर अदालत का फैसला आने के बाद केंद्र और राज्य सरकार ने अयोध्या नगरी के कायाकल्प की जो योजना बनाई उससे यहाँ जमीन के भाव आसमान पर पहुँच गये और इसके तहत जिस भूमि की खरीद पर सवाल उठाये जा रहे हैं उसका बाजार भाव 20 करोड़ रुपए का हो गया। लेकिन ट्रस्ट के प्रयासों से यह जमीन डेढ़ करोड़ रुपए कम कीमत पर यानि साढ़े अठारह करोड़ रुपए में मिली। आरोप लगाने वाले जरा खरीदी गयी जमीन के बाजार भाव के बारे में पता कर लें तो उन्हें अपने आरोपों के भाव भी पता चल जाएंगे। उल्लेखनीय है कि बाग बिजैसी मोहल्ले में ट्रस्ट की ओर से खरीदा गया यह भूखंड ठीक उस स्थान पर है, जहां नयी योजना के मुताबिक श्रीराम जन्मभूमि मंदिर के मॉडल जैसे बन रहे अयोध्या रेलवे स्टेशन का मुख्य द्वार प्रस्तावित है। सवाल जमीन का नहीं होता मौके की जमीन का होता है ।यदि सोशल मीडिया का अध्ययन करें तो रामभक्तों ने जमीन का किसी भी कीमत में खरीदे जाने का स्वागत किया है व अडंगा लगाने वोलों को कड़ी आलोचना भी की है ।

स्वाधीनता संग्राम के महान सैनानी अमरचंद बांठिया

(बलिदान दिवस 22 जून पर विशेष)

महान स्वाधीनता संग्राम सैनानी अमरचंद बांठिया भारत की स्वतंत्रता के प्रथम संग्राम के एक नायक थे। राजस्थान की राजपूतानी सौर्य भूमि बीकानेर में आपका जन्म सन 1793 में हुआ था। आप जाति से जैन थे। भले ही आपका जन्म बीकानेर में हुआ हो। आपकी कर्मभूमि एवं सौर्य स्थली ग्वालियर रही। जब 1858 की भीषण गर्मी में लू के थपेड़ों के बीच, झांसी की वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई तथा उनके योग्य सेना नायक राव साहब और तात्या टोपे आदि सब, अंग्रेजों के खिलाफ युद्ध करने के लिए ग्वालियर के मैदान-ए-जंग में आ डटे थे। उस समय झांसी की रानी की सेना और ग्वालियर के विद्रोही सैनिकों को कई महीनों से वेतन तथा राशन आदि का समुचित प्रबंध न हो पाने से संकटों का सामना करना पड़ रहा था। देश के ऐसे समय में अमरचंद बांठिया आगे बढ़े और महारानी लक्ष्मीबाई के एक इशारे पर ग्वालियर का सारा राजकोष विद्रोहियों के हवाले कर दिया।

अमरचंद बांठिया में देश के लिए कुछ कर गुजरने का जज्बा शुरू से ही था। बाल्यकाल से ही उन्होंने ठान रखा था कि देश की आन-बान और शान के लिए कुछ कर गुजरना है। इतिहास में स्व. अमरचंद के बारे में बहुत ज्यादा जानकारी नहीं मिलती, लेकिन कहा जाता है कि पिता के व्यावसायिक घाटे ने बांठिया परिवार को राजस्थान से ग्वालियर कूच करने के लिए मजबूर कर दिया और यह परिवार सराफा बाजार में आकर बस गया। ग्वालियर की तत्कालीन सिंधिया रियासत के महाराज ने उनकी कीर्ति से प्रभावित होकर उन्हें राजकोष का कोषाध्यक्ष बना दिया। उस समय ग्वालियर का गंगाजली खजाना गुप्त रूप से सुरक्षित था जिसकी जानकारी केवल चुनिन्दा लोगों को ही थी। बांठिया जी भी उनमें से एक थे। वस्तुतः वे खजाने के रक्षक ही नहीं वरन ज्ञाता भी थे। उनकी सादगी, सरलता तथा कर्तव्य परायणता के सभी कायल थे।

1857 का स्वातंत्र समर अपने पूर्ण यौवन पर था, किन्तु दुर्भाग्य से तत्कालीन सिंधिया रियासत अंग्रेजों की मित्र थी। किन्तु अधिकारियों में अक्सर इस विषय में चर्चा हुआ करती थी। एक अधिकारी ने एक दिन जैन मत मानने वाले अमर चंद बांठिया जी से कहा कि भारत माता को दासता से मुक्त करने के लिए

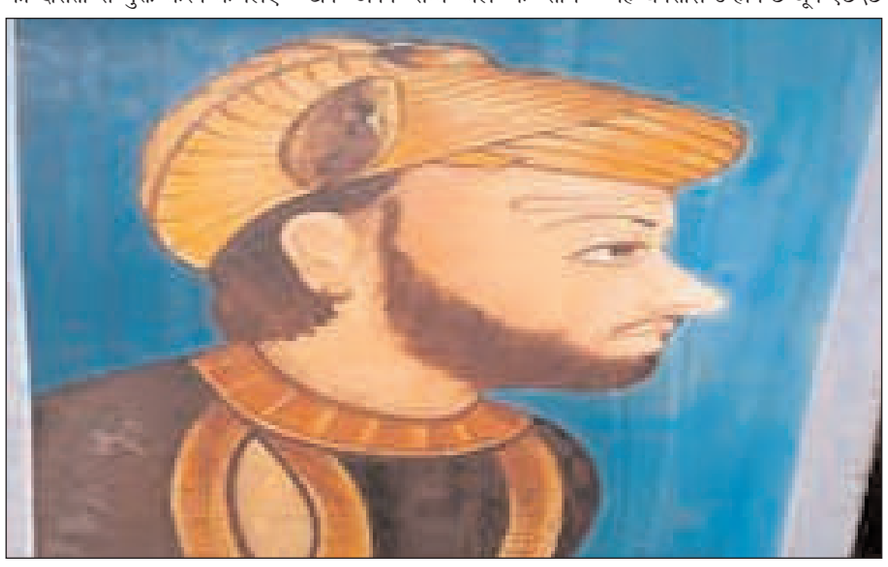

अब तो आपको भी अहिंसा छोड़कर शस्त्र उठा लेना चाहिए। बांठिया जी ने कहा कि भाई मैं हथियार तो नहीं उठा सकता, किन्तु एक दिन समय आने पर ऐसा काम करूंगा जिससे क्रान्ति के पुजारियों अंग्रेजों से लोहा तो ले रहे थे, किन्तु उनकी सेना को कई महीने से न तो वेतन प्राप्त हुआ था और नहीं उनके भोजन आदि की समुचित व्यवस्था थी। अथार्भाव के कारण स्वाधीनता समर दम तोड़ता दिखाई दे रहा था। इस स्थिति को देखते हुए बांठिया जी ने अपनी जान की परवाह न कर क्रांतिकारियों की मदद की तथा ग्वालियर का राजकोष उनके सुपुर्द कर दिया। यह धनराशि उन्होंने ८ जून १८५८ को उपलब्ध कराई। उनकी मदद के बल पर वीरांगना लक्ष्मीबाई दुश्मनों के छक्के छुड़ाने में सफल रहीं। वीरांगना के शहीद होने के चार दिन बाद दिनांक 22 जून 1858 को श्री अमरचंद बांठिया को राजद्रोह के अपराध में उनके निवास स्थान के नजदीक सराफा बाजार में ही सार्वजनिक रूप से नीम के पेड़ पर लटकाकर फाँसी दे दी। उनका शव लगातार तीन दिन तक उसी नीम के पेड़ पर लटका रहा। अंग्रेज शासकों ने उन्हें फांसी देकर एवं शव को पेड़ पर लटका कर उन लोगों को यह संदेश दिया जो अंग्रेजी सत्ता का विरोध करेगा, उसका यही हाल किया जायेगा। अँग्रेजों ने भले ही उन्हें फाँसी पर लटका दिया हो, पर उनका कार्य और शहादत हमेशा प्रेरणा देता रहेगा। 1857 की क्रान्ति में ग्वालियर का नाम स्वर्णाक्षरों में यदि लिखा गया है, तो केवल महान देश भक्त आजादी की लड़ाई में अपने प्राण न्यौछावर करने बाले अमर चंद बांठिया की अतुलनीय बलिदानी गाथा के कारण। वीरांगना महारानी लक्ष्मीबाई जिन्हें हम झांसी की रानी की गौरवगाथा में महान स्वाधीनता सैनानी अमरचंद बांधिया का नाम हमेशा याद किया जायेगा। शहीदों को समर्पित निम्न पंक्तियां प्रासंगिक है:-

ये मेरे वतन के लोगो, जरा आँख में भर लो पानी,
जो शहीद हुए हैं उनकी याद करो कुबार्नी।

कहो तो कह दूँ - पानी में रहकर "मगर" से बैर नहीं लेते

इतने बड़े आईएएस अफसर होने के बाद भी बड़वानी के अपर कलेक्टर "लोकेश कुमार जांगिड़" जी को इतनी भी समझ नहीं आई कि यदि पानी में रहना है तो मगर से बैर नहीं लिया करते ' ये कहावत तो देश का बच्चा बच्चा जानता और समझता है फिर आप ये बात क्यों नहीं समझ पाए? किसने सलाह दी थी आपको कि आप "भगत सिंह" बन जाओ "राणा प्रतापे" की आत्मा अपने अंदर घुसेड़ लो, अब वो जमाना नहीं रहा जब भगत सिंह को "राजगुरु" और "सुखदेव" जैसे साथी मिल गए थे और न वो जमाना रहा जब घास की रोटी खा रहे राणा प्रताप के लिए "भामाशाह" ने अपना पूरा खजान खोल दिया था ' देखा नहीं कैसे "आईएएस असोसिएशन" ने आपसे अपना पल्ला झाड़ लिया इतना ही नहीं वाट्सअप ग्रुप्स भी आपको रिमूव कर दिया, अब आप भी न ऐसे ऐसे स्टेट्स डाले पड़े थे कि "ईमानदारी तेरा किरदार है तो खुदकुशी कर ले सियासी दौर को तो जी हुजूरी की जरूरत है" या फिर "मुझमें दस खामियां हों पर अपने आइने भी भी तो साफ कर लीजिये" अब बताओ ऐसे ऐसे खतरनाक टाइप के स्टेट्स आप अपने वाट्सअप पर डालोगे और सोचोगे कि नेता और अफसर आपकी मदद करेंगे ? अरे भैया ये दौर ही जी हुजूरी का है आप किसी भी सेगमेंट में चले जाओ बिना चमचा गिरी के कुछ हासिल नहीं होता ' चाहे राजनीति हो, नौकरशाही हो, व्यापार हो या फिर और कोई सेगमेंट, जो जी हुजूरी करेगा वो ही आगे बढ़ पायेगा योग्यता, ईमानदारी, शुचिता, सिद्धांत ये सारे शब्द गए तेल लेन' आप कितने बड़े जोधा क्यों न हो उससे कोई फर्क नहीं पड़ता आप कितनी जी हुजूरी कर सकते हो वोही आपकी सफलता का पैमाना बन जाता है अब यदि बड़वानी के कलेक्टर ने ऑक्सीजन कस्ट्क्टर खरीद भी लिए थे तो आपको उसमें पंगा लेने की क्या जरूरत थी, सवालिया निशान लगा दिया कि कलेक्टर साहेब

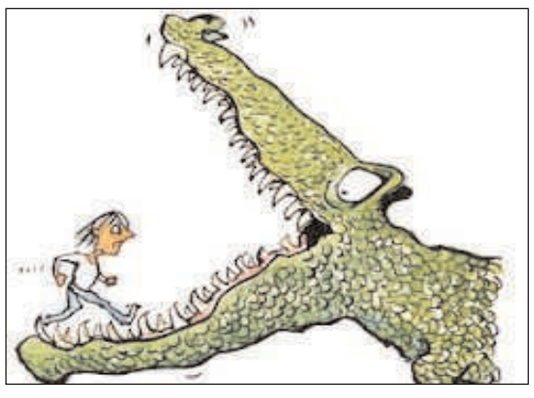

ने पैसा खा लिया ये तो सोचो उस वक्त जान बचाने की पड़ी थी हजारो लोग अस्पताल में भर्ती थे ऑक्सीजन की जरूरत थी यदि कलेक्टर साहेब ने चार पैसे ज्यादा दे भी दिए तो ऐसा कौन सा गुनाह कर दिया जो आपने बबंडर मचा दिया ये सब तो नौकरशाही में चलता है जंहा करोड़ों का घपला हो रहा हो, बिना काम के ठेकेदारों को भुगतान हो रहा हो, एक ही ट्रांसपोर्टर को करोडो के अनाज की सप्लाई का ठेका दे दिया जाता हो वहां यदि हजार दो हजार ज्यादा देकर थोड़ा बहुत प्रसाद उन्होंने पा भी लिया तो कौन सा गुनाह कर दिया कि आपने पूरी नौकरशाही में आग लगा दी ' जांगिड़ साहेब आपको तो नौकरशाही में छ साल से भी ज्यादा हो गया है यदि अब भी उनकी कार्यप्रणाली और काम करने का तरीका आप नहीं सीख पाए और अपनी ईमानदारी का ढोल पीटते रहे तो धिक्कार है आप पर और आपकी आईएएस गिरि पर, अब पड़ गए न अकेले, सबने मुंह फेर लिया, उलटे जान से मारने की धमकी अलग से मिल गई ' दूसरी बात यदि चार साल में आठ तबादले हो ही गये तो ऐसा क्या हो गया, अरे भाई नौकरी करने आये हो तो तबादले तो होंगे ही और फिर ऐसे तेवर लेकर नौकरी करोगे तो सकार और बड़े अफसर तबादला नहीं करेंगे तो क्या थाल लेकर आपकी आरती उतारेंगे? सब कुछ करना था लेकिन सरकार और नौकरशाही की उस दुखती रग को नहीं छेड़ना था सारा शासन प्रशासन अब हुक्का पानी लेकर आप पर टूट पड़ा है अब अपने आप को बचाओ और हम भी देखेंगे कि अपने आप को आप कैसे बचाते हो।

अहंकार तो अपने आप आ जाता है हुजूरे आला- अपने मामाजी यानि प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह ने हाल ही में भोपाल के पास सीहोर में अपने मंत्रियों की एक बैठक लेकर उन्हें उपदेश का काढ़ा पिलाया कि अपना अहंकार छोड़ दो , ये मत सोचो कि मैं मंत्री हूँ, मेरे पास पॉवर है ' मुख्यमंत्री जी ने दो कहानियां भी अपने मंत्रियों को सुना दीं ये भी कहा विनम्र बनो, लोगों की सेवा करने आये हो तो सेवा करो ' मुख्यमंत्री जी बड़े भोले हैं ऐसी ऐसी बाते कर रहे हैं जो न किसी को पसंद आएंगी और न ही उन पर कोई अमल ही करेगा ये तो दुनिया कि रीत हैं कि जब किसी को पावर मिल जाता है तो उसकी भीतर का अहंकार एकदम से जाग जाता है मंत्रियों में अहंकार नहीं होगा तो क्या "घसियारे" को अहंकार होगा ? गाडी, बंगला, नौकर, चाकर, दरवांजे पर लगी लोगों की भीड़, आवेदन लेकर टकटकी लगाए आपका इन्तजार करता आवेदन देने वाला गरीब, जय जय कार करते कार्यकर्ता, सर झुकाये सामने खड़े ऑल इंडिया की परीक्षा पास करके आये आईएएस और आईपीएस अफसर, एक झटके में करोडो के काम देने वाले हस्ताक्षर, अब ऐसे में अहंकार आएगा नहीं तो क्या आएगा, और फिर करोड़ों रुपया खर्चा के बाद जो कुर्सी मिली हो उसमें बैठकर पहले तो अपना इंवेस्टमेंटो वापस लाना पहला कर्तव्य बनता हैं कि नहीं, यदि ऐसे ही जनता की सेवा करने लगे फ्री फोकट में तो हो गया बंटाधार ' अपना घर बार लुटा कर किसी को जनता की सेवा करने का शौक नहीं चरार्या है मामाजी, और फिर ये जो कुर्सी हैं बड़ी ही बेवफा होती है न जाने कब नीचे से खिसक जाए कहना मुश्किल है, वैसे भी अपनी ही पार्टी के दूसरे नेता अदृश्य आरी लेकर कुर्सी की टाँगे टागें काटने के चकार में लगे रहते है इसलिए ऐसी बातें मत करो मामाजी कि जनता की सेवा करो और अहंकार छोड़ दो ये तो ऐसा रोग है जो कुर्सी जाने के बाद ही पीछा छोड़ेगा।

बीएचयू के सिंह द्वार पर एनएसयूआई के कार्यकर्ताओं ने छात्रों पर लगे गैंगस्टर के मुकदमे के खिलाफ जताया विरोध

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। बीएचयू के सिंह द्वार पर एनएसयूआई के कार्यकताओं द्वारा इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हिंदू हॉस्टल छात्रावास के10 छात्रों पर लगे गैंगस्टर के मुकदमे के विरुद्ध एकजुट होकर अपना विरोध जताया व सभी ने सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी की बताते चलें पिछले वर्ष मई के महीने में मनमोहन चौराहे पर हुए विवाद को लेकर योगी सरकार द्वारा 10 छात्रों के ऊपर गैंगस्टर जैसे आपराधिक मुकदमे दर्ज कर उन्हें व उनके परिजनों को परेशान कर रही,जबकि अधिकतर छात्र मौका ए वारदात घटनास्थल पर मौजूद ही नहीं थे। एनएसयूआई के प्रदेश अध्यक्ष व इविवि छात्रसंघ उपाध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा कि हम सरकार को इस तरह छात्रों का भविष्य बर्बाद नहीं करने देंगे।कोरोना काल में भी छात्रों और उनके अभिभावकों को पुलिस प्रशासन द्वारा लगातार प्रताड़ित किया जा रहा है।छात्रों के ऊपर लगे गैंगस्टर को जल्द से जल्द सरकार हटाएं वरना छात्रों के प्रदेश व्यापी आंदोलन के लिए तैयार रहे। प्रदेश

महासचिव व पूर्व उपाध्यक्ष रंजीत तिवारी ने कहा कि लगभग 1 वर्ष होने को है और पुलिस प्रशासन द्वारा लगातार इस कोरोना काल में भी उनके घर दबिश दी जा रही है जिस कारण यह छात्र मानसिक प्रतासरकार से मांग करते हैं कि निर्दोष छात्रों के भविष्य को देखते हुए,उनके ऊपर दर्ज गैंगस्टर जैसे अपराधिक मुकदमे खारिज किया जाए। एनएसयूआई के जिलाध्यक्ष ऋषभ पांडेयड़ित होकर अवसाद ग्रस्त हो गए हैं,हम ने कहा कि वर्तमान सरकार लगातार छात्रों को प्रताड़ित करने का कार्य कर रही है प्रथम दृष्टया देखने से ही प्रतीत होता है कि पुलिस प्रशासन व सरकार अपनी नाकामियों को छुपाने के लिए जानबूझकर इन निर्दोष छात्रों को बलि का बकरा बना रही।छात्र युवा जग चुके है,छात्रों के ऊपर दर्ज मुकदमे को वापस लिया जाए अन्यथा हम सभी साथी गण इसके विरुद्ध एक व्यापक मुहिम चलाएंगे। प्रदर्शन के दौरान मुख्य रूप से एनएसयूआई के प्रदेश अध्यक्ष अखिलेश यादव,जिलाध्यक्ष ऋषभ पाण्डेय,प्रदेश महासचिव रंजीत तिवारी, प्रदेश महासचिव अभिषेक गिरी,अमित यादव,संपूणानंद विश्वविद्यालय के छात्रसंघ अध्यक्ष कृष्ण मोहन शुक्ला, महामंत्री शिवम चौबे, उपाध्यक्ष अजित चौबे, पुस्तकालय मंत्री आशुतोष कुमार मिश्रा, गौतम शर्मा, प्रभु पटेल,मनीष पॉल, महताब आलम, नमन पाण्डेय ,धनंजय पाण्डेय, श्याम बाबू मौर्य, आशिष मौर्या, अभिनव पाण्डेय,अमन गुप्ता आदि लोग उपस्थित रहे।

स्टेट बैंक आँफ इण्डिया के क्रेडिट कार्ड विभाग से ग्राहकों को किया जा रहा फ्राड काल ग्राहक परेशान

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। लगातार हो रहे धांधली से ग्राहकों को हो रही परेशानी बैंक सेवाओं से जहां एक तरफ कस्टमर खुश दिखे वही स्टेट बैंक की क्रेडिट कार्ड की सुविधा के नाम पर आये दिन ग्राहकों को फ्राड काल करके बनाया जा रहा बेवकूफ लूट रहे ग्राहक पुलिस प्रशासन और. बैंक को सूचना के बाद भी नही होती कार्यवाही साइबर क्राइम में शिकायत करने के बाद भी जिम्मेदार अधिकारी रहते है मौन घटनाओ पर नही देते है ध्यान। आपको बताते चले की ताजा घटना स्टेट बैंक आँफ इण्डिया के क्रेडिट कार्ड उपयोग करने वाले ग्राहक की है 22जून मंगलवार शाम 4बजे गिफ्ट देने के नाम पर क्रेडिट कार्ड उपयोगकर्ता के यहां 9540035254, 7571847706 दोनो नम्बर से क्रेडिट कार्ड विभाग से फोन आया जिसमे उसको बताया गया की आपके द्वारा क्रेडिट कार्ड से किये गए उपयोग से खुश होकर स्टेट बैंक क्रेडिट विभाग ने आपको गिफ्ट देने के लिये चयनित किया जिसमे की गिफ्ट आपके घर पर एक हफ्ते के अन्दर कोरियर के माध्यम से पहुंचाया जाएगा इसके लिये आपको अपने क्रेडिट कार्ड का नम्बर और. नम्बर के साथ कार्ड का प्रकार बताना होंगा जब इसकी पड़ताल स्टेट बैंक आँफ इण्डिया अर्दली बाजार शाखा वाराणसी में की गयी तो उन्होने कहा की इस तरह प्रलोभन स्टेट बैंक ग्राहकों को कभी नही देता है परंतु कुछ फर्जी लोग है जो ग्राहकों का दस्तावेज चोरी चुपके पता करके उनको गुमराह करते है जिससे ग्राहकों को परेशानी उत्पन्न होता है जब क्रेडिट कार्ड विभाग से आये हुए नम्बर पर ग्राहक द्वारा फोन मिलाया गया तो उसका फोन बार बार काट दिया जा रहा था कुछ देर क्रेडिट कार्ड विभाग के तरफ से दुबारा फोन आया जिसके बाद ग्राहक से पूछा की अपना कार्ड नम्बर और. डिटेल बताओं जब ग्राहक ने बातचीत करने के दौरान पूछा तो उसने बताया की यह देल्ही से क्रेडिट कार्ड सर्विस डिपार्टमेंट से गिफ्ट देने के सम्बन्ध में किया गया` इस मामले की जानकारी जब ग्राहक वाराणसी सर्विलांस प्रभारी को दी तो उन्होने मामले को ना ध्यान में देते हुए नजर अंदाज किया गया ऐसे कई मामले वाराणसी में पनप रहे है जिनके ऊपर ध्यान देने की जरूरत है जिससे छोटी बड़ी फ्राड और. घटनाओ को रोकने में वाराणसी पुलिस सफल हो सकती है।

संक्षिप्त खबरें

भारतीय महिला शिक्षण संस्था ने अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर किया योगा का आयोजन

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। भारतीय महिला शिक्षण संस्था की तरफ से अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस काशी महोत्सव में बड़े उत्साह के साथ सभी भाई बहनों ने योग गुरु रास बिहारी तिवारी के सान्निध्य में नियमित रूप रूप से सम्पन्न हुई` अध्यक्ष श्रीमती सुधा गुप्ता ने अध्यक्षता की संस्था की छात्राओं ने नृत्य कथक किर सभी का मन मोह लिया। सचिव उर्मिला मिश्रा ने उपाध्यक्ष शीला रजनी सिंह सावित्री सरिता ,नीसा सिंह, रीना सिंह और सभी के उपस्थिति में कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

योग दिवस 365 दिन मनाना चाहिये - शशिप्रताप सिंह

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर सुभासपा प्रदेश उपाध्यक्ष शशिप्रताप सिंह रोज की तरह पत्नी राजपूत सरिता सिंह के साथ योग किया। शशिप्रताप सिंह ने कहा कि योग भारत की पुरातन करतब है हमारे यहां के ऋषिमुनियों की देन है जो 84 तरह का योग करतब करते थे जिसका अवलोकन पूरा विश्व आज निरोग रहने के लिये कर रहा है हमे निरोग रहने के लिये रोज योग दिवस मनाना चाहिये।

भाजपा रामनगर ने किया बृक्षारोपण का कार्यक्रम

प्रखर रामनगर वाराणसी। भीटी ग्राम सभा मे शीर्ष नेतृत्व के निदेर्शानुसार भाजपा नगर अध्यक्ष अजय प्रताप सिंह के नेतृत्व में वृक्षारोपण का कार्यक्रम किया गया, जिसमे कार्यकर्ताओ को जागरूक किया कि आप सब भी पर्यावरण संरक्षण करें। अपने घरों के आगे आक्सीजन युक्त एवं औषधिय पौधे लगाए जिससे हम स्वस्थ और सुरक्षित रह सके और कोरोना पर जीत भी मिले। उन्होंने कहा व्यक्ति को अपने जीवन में एक पौधा लगाना मानो अपने लक्ष्य को पाने के बराबर है।कार्यक्रम में प्रमुख रूप से मंडल अध्यक्ष अजय प्रताप सिंह, सभासद नंद लाल चौहान कृष्णा मौर्य,राजकपूर शास्त्री, सुनील गुप्ता आशुतोष पांडेय विनोद कुमार पटेल संजय बाल्मिकी निक्की सिंह, अर्चना सिंह, सुमन यादव उपस्थित रहे।

दिलदारनगर-चित्रकोनी मार्ग को बनवाने की मांग को लेकर ज्ञापन सौंपा

प्रखर सेवराई गाजीपुर। दिलदारनगर से चित्रकोनी मार्ग को जल्द बनवाने की मांग को लेकर क्षेत्रीय कांग्रेसी नेता फरीद अहमद गाजी ने एसडीएम को ज्ञापन सौंपा है। दिए गए ज्ञापन में बताया कि दिलदारनगर सरैला चट्टी से ग्राम चित्रकोनी जो यूपी-बिहार करमनासा के अंतिम सीमा पर स्थित है जिसके आसपास करीब आधा दर्जन गांव स्तिथ है। लेकिन बरसों से गढ़ों में तब्दील यह रोड़ बद से बद्दतर हालात में है। गाजी ने सरकार पर निशाना साधते हुए बताया कि इसी रोड़ की तरह इलाके में तकरीबन दर्जनों गांव के रोड़ की स्थिति काफी दयनीय है। गड्ढा मुक्त सरकार की वादे अब तो पूरी तरह झूठी साबित हो रही। इस मौके पर फरीद गाजी द्वारा 'एसडीएम' को प्रतिनिधि दल में ज्ञापन देने के लिए मुख्य रूप से आजाद खान,खान मोहम्मद आसिम गाजी और अनीस खां, रेहान, जावेद, गयासुद्दीन शामिल रहे।

नशीला पदार्थ संग जहरखुरान चढ़ा जीआरपी के हत्थे

प्रखर दिलदारनगर गाजीपुर। ट्रेनों में दोस्ती कर धोखे से नशीला पदार्थ खिलाकर लूटने वाले जहरखुरान को जीआरपी डीडीयू की टीम ने नशीला पाउडर के साथ दबोच कर जेल भेज दिया।अपर पुलिस महानिदेशक रेलवे लखनऊ,पुलिस अधीक्षक रेलवे प्रयागराज तथा सी ओ रेलवे वाराणसी के रेल अपराधियों के खिलाफ सख्त कदम उठाए जाने के निर्देश पर मंगलवार को जीआरपी थाने के प्रभारी निरीक्षक अशोक कुमार दुबे के नेतृत्व में वरिष्ठ उपनिरीक्षक डी पी यादव, एस आई गिरिजाशंकर यादव की टीम अपराधियों और संदिग्धों के धर पकड़ के लिए भ्रमणशील थी।इसी दौरान प्लेटफॉर्म संख्या3/4के पश्चिमी छोर के पास खड़ा एक युवक पुलिस टीम को देखते ही भागने लगा।जिसे दौड़ा कर जीआरपी थाने के एच सी शशिकांत यादव तथा कांस्टेबल रंगबहादुर गुप्ता ने धर दबोचा और जब युवक की तलाशी ली गई तो उसके पास से 70 ग्राम अल्प्राजोलम नशीला पाउडर बरामद किया गया।इस बाबत पूछे जाने पर जीआरपी इंस्पेक्टर श्री दुबे ने बताया कि पकड़ में आया जहरखुरान मनोज कुमार पुत्र मुन्ना कुमार चंदौली जिले के बबुरी थाना क्षेत्र के ग्राम उत्तरौली का निवासी है।जिसके उपर जीआरपी थाने में ट्रेनों में जहरखुरानी कर यात्रियों के सामानों की चोरी के तीन मुकदमे दर्ज हैं।जिसे आवश्यक कार्रवाई के बाद जेल भेज दिया गया।

पुलिस अधीक्षक ने मड़िहान के नक्सल प्रभावित क्षेत्र में किया सघन कांबिंग

प्रखर मिजार्पुर। मडिहान पुलिस अधीक्षक मीरजापुर अजय कुमार सिंह द्वारा थाना मड़िहान क्षेत्र में पुलिस एवं जनता के मध्य सुदृढ़ कनेक्टविटी बनाये रखने तथा पुलिस के प्रति विश्वास में दृढ़ता बनाये रखने के लिए कम्युनिटी पुलिसिंग के तहत नक्सल प्रभावित क्षेत्र कोटवां जंगल व उसके आस-पास के क्षेत्रों में पुलिस व पीएसी बल के साथ सघन कांबिंग की गयी । कांबिंग के दौरान संदिग्ध सम्भावित स्थानों को सर्च करते हुए संदिग्ध गतिविधियों के बारें में धरातलीय अभिसूचना संकलन की कार्यवाही की गयी । उक्त कांबिंग में प्रभारी निरीक्षक मड़िहान, पीआरओ पुलिस अधीक्षक व पीएसी सहित भारी संख्या में पुलिस बल मौजूद रहा ।

भदोही में विवाद के बीच चली गोली से पूर्व ग्राम प्रधान घायल

प्रखर भदोही । भदोही जनपद के सुरियावां थाना क्षेत्र के बनकट गाँव में सोमवार की रात पूर्व ग्राम प्रधान के घर पहुंच कर कुछ लोगों ने विवाद कर लिया। बात इतनी बढ़ गई कि जमकर लाठी-डंडे चले। इस दौरान हुई फायरिंग में पूर्व ग्रामप्रधान को गोली लगी है। इलाज के लिए उन्हें वाराणसी के निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पुलिस के अनुसार सुरियावां थाना क्षेत्र के बनकट गाँव में सोमवार की रात बच्चों के विवाद पूर्व ग्रामप्रधान संजय दूबे और बगल के गाँव के लोगों से बच्चों के मोबाइल पर बातचीत को लेकर विवाद बढ़ गया। रात में हमलावर पूर्व ग्रामप्रधान कर घर पर चढ़ गए। जानकारी मिलने पर पूर्व प्रधान संजय दुबे कहीं गए थे और मौके पर पहुँच गये। इस दौरान दोनों पक्ष में जमकर मारपीट और फायरिंग हुई। पुलिस के अनुसार इसी बीच पूर्व ग्राम प्रधान संजय दूबे को दो गोली लगी है। गोली पीठ में लगीं है। सुरियावां थानाध्यक्ष प्रदीप कुमार ने बताया कि बच्चों के मोबाइल पर बात को लेकर विवाद बढ़ा और यहाँ तक पहुंच गया। उन्होंने बताया कि पूर्व ग्रामप्रधान संजय दूबे और बगल के गाँव एक परिवार के बीच यह विवाद सोमवार की रात में हुआ। इस घटना में संजय दूबे को दो गोली लगी है। फिलहाल पुलिस जांच कर रहीं है। पूर्व ग्रामप्रधान का इलाज वाराणसी स्थित एक निजी अस्पताल में चल रहा है।

नवागत एसडीएम ने किया कार्यभार ग्रहण

प्रखर पिंडरा वाराणसी। नवागत एसडीएम पिंडरा गिरीश चंद द्विवेदी ने मंगलवार को पिंडरा स्थित अपने कार्यालय में कार्यभार ग्रहण किया। कार्यभार ग्रहण करते ही अपने मातहतों संग बैठक की और शासन के मंशानुरूप कार्य करने और सामाजिक और प्रतिबद्धता के साथ कार्य करने की नसीहत दी। बताते चलें कि अपर नगर मजिस्ट्रेट प्रथम गिरीश चन्द्र द्विवेदी को एसडीएम पिंडरा और एसडीएम पिंडरा जयप्रकाश को अपर नगर मजिस्ट्रेट द्वितीय बनाया गया।

ब्लॉक परिसर में स्थापित डॉ. अंबेडकर की प्रतिमा से अज्ञात व्यक्ति ने तोड़ा चश्मा

प्रखर संतकबीरनगर। सेमारियावां ब्लॉक परिसर में लगे बाबा साहब डॉ० भीमराव अम्बेडकर जी के प्रतिमा पर बार बार कुछ अज्ञात लोगों के द्वारा क्षतिग्रस्त कर दिया जाता है, इस घटना को लेकर आसपास के क्षेत्रों में मचा आक्रोश, भीम आर्मी के द्वारा खंड विकास अधिकारी , दुधारा थाना प्रभारी को भी शिकायती पत्र सौंपाकर कार्रवाई करने की मांग,ऐसी दशा में बुद्धिष्ट सोसायटी आफ इंडिया, भीम आर्मी एवं अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति ब्लाक ईकाई यह मांग करती है कि इसकी सुरक्षा को देखते हुए निम्नलिखित बिन्दुओं पर कार्य किया जाए।

1- स्मारक के चारों तरफ जाली एवं मुख्य द्वार पर गेट का निर्माण।

2- सीसीटीवी कैमरा लगाया जाए।

3- उचित प्रकाश की व्यवस्था की जाए।

4- नियमित साफ सफाई की व्यवस्था की जाए।

5- अराजकतत्वों द्वारा तोड़ फोड़ किए जाने पर जांच कराकर उचित कार्रवाई की जाए । उपरोक्त बिंदुओं पर शीघ्र कार्रवाई न किए जाने पर उपरोक्त संगठन धरना/ प्रर्दशन के लिए बाह्य होगा इसकी सम्पुर्ण जिम्मेदारी आपकी होगी, दुधारा थाना क्षेत्र के विकासखंड सेमारियावां का मामला। इस दौरान मंगल सिंह राव भीम आर्मी ब्लॉक प्रमुख उपाध्यक्ष, राघवेंद्र प्रताप विधानसभा अध्यक्ष खलीलाबाद भीम आर्मी अमरनाथ बौद्ध ब्लॉक अध्यक्ष भीम आर्मी राजकुमार भारती बस्ती आजाद समाज पार्टी जिला उपाध्यक्ष किशन राव सेक्टर प्रभारी ब्लॉक सेमरियावां गिराने लाल रामनिवास तमाम लोग मौजूद रहे।

विश्व जागृति दिवस का किया गया आयोजन

प्रखर प्रयागराज। स्वदेशी जागरण मंच के आवाहन पर कोरोना महामारी से रक्षा के लिए प्राण दायिनी वैक्सीन को पेटेंट मुक्त रखने और सर्व सुलभ बनाने हेतु जन जागरण के उद्देश्य से विश्व जागृति दिवस का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में स्वदेशी जागरण मंच के पूर्वी उत्तर प्रदेश के क्षेत्रीय विचार और बौद्धिक प्रमुख डॉ वी के सिंह जी की गरिमामय उपस्थिति रही और अध्यक्षता जनकवि जे के शर्मा जी ने किया। कार्यक्रम में परिचय एवं विषय प्रवर्तन डॉ भवेश द्विवेदी (महानगर सह-संयोजक, स्वदेशी जागरण मंच प्रयागराज) द्वारा किया गया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में ईश्वर शरण डिग्री कॉलेज के सहायक प्रोफेसर एवं अर्थशास्त्री डॉ हर्ष मणि सिंह जी (स्वदेशी जागरण

मंच के विश्वविद्यालय मंडल संयोजक, प्रयागराज) ने पेटेंट से होने वाले नुकसान और संबंधित आयामों को सरल भाषा में तर्कपूर्ण रूप से प्रस्तुत किया। गांधी अकादमी के निदेशक एवं शिक्षाविद श्री ओम प्रकाश शुक्ला जी, पंडृ देवी दत्त शुक्ल संस्थान के प्रमुख श्री व्रतशील शर्मा जी, स्वदेशी जागरण मंच के विश्वविद्यालय मंडल छात्र प्रमुख शैलेंद्र मणि त्रिपाठी ने भी अपने विचारों को प्रस्तुत किया। संगोष्ठी के पश्चात सभी स्वदेशी कार्यकताओं ने वैक्सीन को पेटेंट से मुक्त रखने की मांग को प्रदर्शित किया। आज के कार्यक्रम में कार्यकर्ताओ सहित बड़ी संख्या में गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

नदी में डूबने से चचेरे भाई-बहन की मौत

प्रखर जमालपुर(मीरजापुर)। थाना क्षेत्र के चन्दौली गांव के पास मंगलवार को गरई नदी मे डूबने से चचरे भाई और बहन की मौत हो गयी। रेरूपुर गांव निवासी संदीप पुत्र राजेश भारती उम्र लगभग 12 वर्ष अपने बड़े पिता रामचरन की पुत्री प्रियंका उम्र लगभग 10 वर्ष के साथ सुबह सिवान भैंस चराने के लिये गया हुआ था।करीब 11 बजे चन्दौली गांव के पास गरई नदी मे भैंस उतर गयी और भैंस को हांकने मे चचरे भाई और बहन दोनों नदी मे गिरकर गहरे पानी मे डूबने लगे।नदी के उस पार चंदौली गांव के ग्रामीणो ने बच्चो को नदी में डूबते देख कर शोर मचाया और जबतक नदी से दोनो बच्चों को बाहर निकाला गया तबतक दोनों की मौत हो गयी।बच्चों की मौत से परिजनो मे कोहराम मच गया और गाव मे सन्नाटा पसर गया। माता पिता का रो-रोकर हाल बेहाल हो गया। मृतक संदीप माता पिता की दो संतानों मे दूसरे नंबर पर था ।मृतक बालिका प्रियंका एक भाई एवं चार बहनों मे सबसे छोटी थी ।मृतक बच्चों के पिता मेहनत मजदूरी कर परिवार का पालन पोषण करते हैं।

खेतासराय पुलिस ने गैंगेस्टर एक युवक को किया गिरफ्तार

प्रखर खेतासराय(जौनपुर) । पुलिस अधीक्षक जनपद जौनपुर के कुशल निर्देशन में अपराध की रोकथाम एवं अपराधियो की गिरफ्तारी हेतु चलाये जा रहे विशेष अभियान के क्रम मे अपर पुलिस अधीक्षक नगर जौनपुर के दिशा निर्देशन एवं सीओ शाहगंज के निकट पर्यवेक्षण मे तलाश वांछित पुरस्कार घोषित अपराधियों की गिरफ्तारी के अभियान के क्रम में कार्यवाही करते हुए । थाना प्रभारी के नेतृत्व में खेतासराय पुलिस द्वारा मुखबिर की सूचना पर थाना स्थानीय के उत्तर प्रदेश गैंगेस्टर एक्ट से संबंधित वांछित युवक रईश कंकाली पुत्र शिबली ग्राम लेदरही से गिरफ्तार किया गया इस अपराधी के ऊपर कई धाराओं में मुकदमा दर्ज है। गिरफ्तार करने वाली पुलिस टीम उप निरीक्षक हरिशंकर यादव , हेड कांस्टेबल अनन्त यादव , कांस्टेबल छठ्ठू यादव , कांस्टेबल दिनेश सरोज ,कांस्टेबल अमरनाथ यादव, कांस्टेबल सतीश कुमार, कृष्णानन्द आदि लोग थे।

कोरोना की प्रतिरोधक दवाओ का किया गया वितरण

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। पाण्डेयपुर स्थित आवास विकास कॉलोनी मुडकाट्टा बाबा के पार्क में डॉ सुरेश राय पूर्व वरिष्ठ होम्योपैथी चिकित्सा अधिकारी पंडित दीनदयाल उपाध्याय चिकित्सालय पांडेयपुर वाराणसी के सहयोग से महादेव होमोपैथिक क्लिनिक कमला नगर चौराहा छोटा लालपुर द्वारा कोरोना की प्रतिरोधक दवा सभासद श्री संदीप कुमार श्रीवास्तव एवं महेंद्र नाथ पांडेय अध्यक्ष काशी विद्यापीठ विश्वविद्यालय कर्मचारी संघ के हाथो दवा वितरित की गयी। जिसमें लगभग 40 लोग एवं बॉलिबाल क्लब तथा योगा टीम के सदस्य एवं संभ्रांत नागरिक श्री अशोक कुमार शर्मा, श्री आर जी चौहान, दुर्गा चौहान, ओ. पी. तिवारी, श्री अवनीश कुमार बसपा coordinator आर. एन. सिंह , एस पी सिंह एवं संभ्रांत नागरिक उपस्थित रहे, तदोपरान्त सभासद श्रीवास्तव एवं महेंद्र नाथ पांडेय एवं अन्य लोगो को डॉ सुरेश राय द्वारा माल्यार्पण कर- के स्वागत किया गया तथा अंत में डॉ सुरेश राय जी ने आगन्तुक लोगो के प्रति आभार व्यक्त किया।

वीएचएनडी सत्रों के दौरान लाभार्थियों को मिले गुणवत्तापूर्ण सुविधा

प्रखर संतकबीरनगर। आमजन को स्वास्थ्य एवं पोषण से सम्बन्धित सुविधाएं उनके घर के नजदीक ही देने के लिए चलाए जाने वाले वीएचएनडी (विलेज हेल्थ एण्ड न्यूट्रीशन डे) सत्रों में लाभार्थियों को गुणवत्तापूर्ण सुविधाएं प्रदान की जाएं। इसके लिए सभी प्रभारी चिकित्सा अधिकारी अपनी कार्ययोजना बना लें और 30 जून तक सीएमओ कार्यालय में दे दें। एक जुलाई से जनपद के सभी वीएचएनडी सत्र पूरी क्षमता व सभी लॉजिस्टिक के साथ चलेंगे।मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ. इन्द्र विजय विश्वकर्मा ने जनपद के सभी चिकित्सा अधिकारियों को यह निर्देश जारी करते हुए कहा है कि वह अपने क्षेत्र के अन्तर्गत आने वाले वीएचएनडी स्थलों का निरीक्षण करके सारे लॉजिस्टिक देख लें। अगर कहीं भी किसी चीज की कमी हो तो उसे पूर्ण करा दें। यह शासन की विशेष प्राथमिकता के अन्तर्गत आता है। इसलिए इसमें लापरवाही कदापि न बरतें। जिन लॉजिस्टिक की जरुरत हो उनको पूर्ण करके सुसज्जित तरीके से

कोविड प्रोटोकाल का अनुपालन करते हुए वीएचएनडी सत्रों का संचालन कराएं। इस दौरान उनका सहयोगात्मक पर्यवेक्षण भी कराएं।

बुधवार व शनिवार को होता है आयोजन

वीएचएनडी का आयोजन सप्ताह में दो बार बुधवार और शनिवार को किया जाता है एएनएम, आशा व आंगनबाडी कार्यकताओं की भागीदारी से आयोजित होने वाले इस सत्र में गर्भवती और बच?चों को टीके लगाकर प्रतिरक्षित किया जाता है। पांचवे शनिवार को वीएचएनडी सत्र का आयोजन नहीं किया जाता है।

इन आठ दिशा निदेर्शों का हो अनुपालन

1. हर वीएचएनडी सत्र पर एक एएनएम को लगाएं तथा समस्त सम्बन्धित सेवाएं लाभार्थियों को प्रदान करें।

2. वीएचएनडी सत्र ऐसे स्थान पर संचलित हो जहां पर निजता, पेट जांच,शौचालय आदि की सुविधा हो।

3. वीएचएनडी निर्धारित समय पर शुरू हो, हर सत्र किसी भी दशा में सुबह नौ बजे से शुरू कर दिए जाए।

4. हर पर्यवेक्षक वीएचएनडी का नियमित पर्यवेक्षण करे तथा वहां पर पाई गई कमियों को दूर कराएं।

5. वीएचएनडी सत्र पर ड्यू लिस्ट अवश्य होनी चाहिए जिसके माध्यम से लक्षित लाभार्थी को सेवा मिले।

6. सभी एएनएम को मांग पत्र के आधार पर ही लॉजिस्टिक, औषधि किट आदि उपलब्ध कराई जाय।

7. वीएचएनडी सत्र पर लॉजिस्टिक, औषधि किट की शत प्रतिशत उपलब्धता सुनिश्चित कराई जाय।

8 गर्भवती महिलाओं का पहली तिमाही में रजिस्ट्रेशन तथा 4 एएनसी (प्रसव पूर्व) जांच कराना सुनिश्चित करें।

नेहरू युवा केन्द्र द्वारा योगाभ्यास का आयोजन

प्रखर गड़खरा वाराणसी । सप्तम अंतर्राष्टीय योगा दिवस के अवसर पर नेहरू युवा केन्द्र खेल मंत्रालय भारत सरकार द्वारा उत्तर प्रदेश वाराणसी के जिला युवा अधिकारी निखिल गुप्ता के निर्देशन पर ग्राम गडखरा बड़की भरऊटी मे भव्य योगाभ्यास का आयोजन किया गया और साथ ही लोगो को 2 गज की दूरी मास्क है जरूरी का पालन कराते हुऐ स्वंय सेविका वंदना राजभर ने बच्चों को कापी पेंसिल बटा साथ ही बच्चों व बड़ो को मास्क वितरण भी किया ।वहा पर उपस्थित युवा मण्डल के सदस्य सुरेन्द्र राजभर विपिन राजभर दीपक राजभर व अन्य लोगो ने जुड़कर कार्यक्रम को सफल एवं समपन्न बनाया। राष्ट्रीय स्वंय सेविका वंदना राजभर ने गाँव- गाँव जाकर योग पर विस्तृत जानकारी दी और लोगो को योगा के साथ -साथ कोविड 19 के बारे मे भी जागरूक किया।

महिला ने मैजिक खलासी पर लगाया उच्चकागिरी का आरोप

पीडीडीयू नगर। स्थानीय कोतवाली थाना अंतर्गत लाट नंबर 2 निवासी महिला ने मैजिक खलासी पर लगाया उच्चकागिरी का आरोप प्राप्त जानकारी के अनुसार जौनपुर निवासिनी महिला रेखा सिंह ने बताया कि सोमवार के दोपहर हम वाराणसी से मैजिक पकड़कर अपने मायके पीडीडीयू नगर आ रहे थे तभी रास्ते में मैजिक खलासी द्वारा हमारे बैग जो मैजिक के छत पर रखा हुआ था उसको मैजिक चालक ने खोलने का प्रयास किया जिस पर हमें संदेह हुआ तो हमने उससे पूछा कि क्या कर रहे हो तो इस बाबत मैजिक खलासी ने बताया कि बैग गिरने वाला था हम ठीक कर रहे हैं फिर उसके बाद महिला अपने घर पीडीडीयू नगर चली गई उसके बाद महिला ने बताया कि हमने घर जाकर देखा तो मेरा बैग फटा हुआ था और उसने आरोप लगाया कि मेरे बैग में से सोने के जेवरात व 15 हजार रु नगद गायब रहे जिसकी सूचना पर हम लोग तत्काल फिर जीटी रोड पहुंचे और मैजिक खलासी को पकड़ा मगर मैजिक खलासी हाथ छुड़ा कर भाग गया।वहीं महिला ने बताया कि इसकी सूचना हमने स्थानीय कोतवाली पुलिस को भी दे दी है।

चोरी और लूट करने वाले गिरोह का पर्दाफाश

प्रखर संतकबीरनगर। -चोरी-छिनैती और लूट करने वाले गैंग का पर्दाफाश,गैंग के मास्टरमाइंड समेत कुल 5 अरेस्ट,1 देशी रिवाल्वर,2 कारतूस,लूट के सोने और चांदी के आभूषण, चोरी के 6 मोबाइल बरामद,शहर कोतवाली क्षेत्र में हुई तीन घटनाओं का खुलासा कर सभी अभियुक्तों को पुलिस ने भेजा जेल ।पूछताछ के दौरान अभियुक्तों ने कहा कि हम सभी का एक संगठित गिरोह है गिरोह का मुखिया रागेन्द्र चौधरी है उसी के नेतृत्व मे योजना के अनुसार हम 04 लोग अपने आर्थिक, भौतिक व दुनियानवी लाभ के लिए चोरी नकबजनी व लूट करते है तथा चोरी में मिले हुए सामान व जेवरात को बेंचकर मिलें पैसों को आपस में बाँट लेते है । अभियुक्तगणों द्वारा स्वीकार किया गया कि थाना कोतवाली खलीलाबाद क्षेत्र में इस वर्ष कुल 03 घटनाओं को अंजाम दिया गया था दिनांक 21.02.2021 की रात्रि में हम सभी ने मिलकर सरयूपुरम कालोनी में बन्द मकान का ताला काटकर घर के अन्दर से जेवरात व नकदी चुराया था, जेवरात को अभियुक्तगणों द्वारा खलीलाबाद में अजय कुमार सोनी पुत्र स्व0 राजकुमार सोनी निवासी तितौवा चौराहा उसका रोड़ थाना कोतवाली खलीलाबाद जनपद सन्तकबीरनगर को दिनांक 24.02.2021 को बेंच दिया था । अभियुक्तगणों द्वारा पूछताछ के दौरान बताया गया कि 25.05.2021 को अपने गैंग लीडर रागेन्द्र चौधरी के निर्देश पर तामेश्वरनाथ के करीब ग्राम गोरयाभार में चोरी के लिए उपर्युक्त मकान की तलाश कर रहे थे परन्तु असफल होने पर वापस आते समय इण्डियन आयल पेट्रोल पम्प गोरयाभार से 01 किमी पहले सरकारी ट्यूबबेल मोड़ के पास एक मोटरसाइकिल चालक पर हमला कर मारपीट व घायल करके उसकी मोटरसाइकिल हीरोस्पलेण्डर रजि0नं0- यू0पी0 58 डी09698 छीन लिए थे जिसको रागेन्द्र चौधरी द्वारा रामानन्द विश्वकर्मा पुत्र अज्ञात निवासी बस्ती को 05 हजार रुपयों में बेंच दिया गया था तथा दिनांक 13/14.06.2021 की रात्रि में थाना क्षेत्र कोतवाली खलीलाबाद के ग्राम सरौली में एक मकान में छत के रास्ते घुसकर वीवो कम्पनी का एक अदद मोबाईल एक अदद मंगलसूत्र का लाकेट व एक सेट कान का झाला सोने का तथा एक सेट पाजेब व एक सेट पायल चांदी का मिला था तथा चोरी का लाकेट 16.06.2021 को अजय कुमार सोनी के घर जाकर बेंच दिया था परन्तु अजय सोनी के पास उस समय हम लोगों को देने के लिए रुपये नही थे इसवजह से शेष बचे जेवरात हमारे गैंग लीडर अपने साथ लेकर चले गए थे, आज दिनांक 21/22.06.2021 को शेष बचे जेवरात को अजय सोनी को देकर पैसा लेने के लिए एक साथ इकठ्ठा हुए थे ।

गांवो से लेकर ब्लॉक व तहसील तक लगे योग शिविर, ग्रामीणों ने लिया संकल्प

प्रखर पिंडरा वाराणसी। ग्रामीण क्षेत्रों में सोमवार को 7वे अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर गांवो से लेकर तहसील तक और घरों से लेकर कस्बो में योग शिविर लगे और लोगों ने योग को घर घर तक पहुचाने का संकल्प लिया। पिंडरा ब्लॉक मुख्यालय पर एसडीएम पिंडरा जयप्रकाश व बीडीओ वी के जायसवाल के नेतृत्व में शिविर लगा। जिसमे समस्त अधिकारियों व कर्मचारियों ने भाग लिया। इसके अलावा तहसील पिंडरा, ब्लॉक संसाधन केंद्र मंगारी के अलावा चयनित ब्लॉक के विभिन्न ग्राम पंचायतों में योग शिविर लगा। कठिराव मण्डल का दीनदयाल उपाध्याय इंटर कालेज बाबतपुर में सजंय राजभर व योग प्रशिक्षक बृजभूषण सिंह, सिंधोरा मण्डल का रामजान की मन्दिर मरूई में जिला मंत्री फौजदार शर्मा व योग प्रशिक्षक हेमंत के नेतृत्व में ग्रामीणों ने योग किया। इसके अलावा घरों में भी योग कर लोंगो ने योग को अपने जीवन मे उतारने का संकल्प लिया। वही ग्रामीण क्षेत्रों में विभिन्न संस्थाओं द्वारा भी योग शिविर का आयोजन किया गया। अंतराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर पिण्डरा मण्डल में पदाधिकारियों एवं कार्यकताओं के साथ जिलाउपाध्यक्ष पवन सिंह के उपस्थिति में योगासन किया।जिसमें मण्डल प्रभारी अश्वनी त्रिपाठी, मण्डल अध्यक्ष मनीष पाठक, संतोष सिंह, अजय ऊदल जिलापंचायत सदस्य अरुण सिंह बिन्नी के साथ अनेक लोग रहे।

भारत विकास परिषद वरुणा शाखा ने विश्व योग दिवस के अवसर पर योग शिविर का किया आयोजन

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। भारत विकास परिषद वरुणा शाखा द्वारा योग दिवस के अवसर पर पांडेयपुर स्थित योग आरोग्य केंद्र में योग प्रशिक्षक सुरभि जी के निर्देशन में योग शिविर का आयोजन किया गया जिसमें शाखा के सदस्यों द्वारा योग व सूक्ष्म व्यायाम किया गया व उन से होने वाले फायदे तथा किस क्रिया को करने से किस तरह की बीमारियां कौन-कौन सी बीमारियां दूर हो सकती है उस पर भी चर्चा की गई। योग शिविर का आयोजन शाखा सचिव मनीष गुप्ता द्वारा किया गया जिसमें शाखा अध्यक्ष संजय गुप्ता के साथ विशेष आमंत्रित सदस्य प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ राम सुधार सिंह, शाखा के वरिष्ठ सहयोगी रमेश लालवानी जी विवेक सूद जी के साथ आंचल मौर्या जी अंबे सिंह जी अरविंद जी चंचल जी सतीश चौबे जी आदि लोग भी सम्मिलित हुए और इस शिविर का लाभ उठाया।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर अस्सी घाट पर किया गया योग का आयोजन

प्रखर पुर्वांचल वाराणसी। अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर संस्था और ताईकवांडो खिलाड़ी द्वारा वाराणसी के अस्सी घाट पर अलग-अलग योग का आयोजन किया गया। जिसमे श्री सतनारायण ट्रस्ट चौक के बैनर तले सुबह बनारस के मंच पर पेशेवर महिला प्रशिक्षक प्रिया जायसवाल व प्रगति जायसवाल ने लड़कियों को विभिन्न योग क्रियाएं एवं प्राणायाम कराया और स्वस्थ एवं निरोग रहने के मंत्र बताए।वही ताईकवांडो की राष्ट्रीय खिलाड़ी हर्षा नाथानी ने भी योग दिवस पर लोगो को योग और प्राणायाम कराया और कहा कि हमारे देश ने योग को पूरे विश्व मे पहुँचाया।पूरा विश्व आज योग को अपना रहा है और इसका श्रेय हमारे योग गुरु स्वामी रामदेव को जाता है। गौरतलब है कि हर्षा नाथानी लोगो को योग का निःशुल्क प्रशिक्षण देती रही है और ताईकवांडो की राष्ट्रीय स्तर की खिलाड़ी,कोच एवं समाजसेविका होने के साथ-साथ योग प्रशिक्षक भी है।

एमएलसी आशुतोष सिन्हा ने कहा कायस्थों पर हो रहे हमलों का संज्ञान ले सरकार

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। कायस्थ समाज पर लगातार हो रहे हमलों के विरोध में अखिल भारतीय कायस्थ महासभा द्वारा विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में एमएलसी आशुतोष सिन्हा उपस्थित थे । अपने विचार व्यक्त करते हुए एमएलसी आशुतोष सिन्हा ने कहा कि यूपी में कायस्थों पर लगातार हमले हो रहे है, कायस्थ समाज का उत्पीड़न बढ़ता जा रहा है । प्रतापगढ़ में कायस्थ समाज के पत्रकार की हत्या के बाद यूपी की कानून व्यवस्था पर सवाल खड़ा करते हुए कहा कि सरकार बताए कि जब पत्रकार ने सुरक्षा मांगी थी तो सुरक्षा क्यों नहीं दी गई । सरकार को सभी मामलों का संज्ञान लेना चहिये और जल्द से जल्द न्याय दिलाना चाहिए। अखिल भारतीय कायस्थ महासभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष अमित श्रीवास्तव ने बताया कि कायस्थ समाज के जिस पत्रकार ने शराब माफिया से जान का खतरा बताते हुए 12 जून को अपर पुलिस महानिदेशक प्रयागराज से सुरक्षा की गुहार लगाई थी। उस पत्रकार का अगली रात सड़क किनारे शव मिलना, अपने पीछे कई सवाल खड़े करता है । इस घटना की निष्पक्ष जांच होनी चाहिए और पीड़ित पत्रकार को जल्द से जल्द न्याय मिलना चाहिए । प्रदेश उपाध्यक्ष अभिषेक श्रीवास्तव ने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि कायस्थ भाइयों का उत्पीड़न लगातार बढ़ता जा रहा है । कायस्थ महासभा इसका पुरजोर विरोध करता है और शासन प्रशासन से अपील करता है कि जल्द से जल्द कायस्थ समाज के लोगों को न्याय मिले । संगोष्ठी की समाप्ती पर मुख्य अतिथि एसएलसी आशुतोष सिन्हा को जिला अध्यक्ष मनीष श्रीवास्तव, सचिव सुधांशु सक्सेना द्वारा स्मृति चिन्ह दे कर सम्मानित किया गया । इस अवसर पर अतुल श्रीवास्तव, राजीव रंजन श्रीवास्तव आदि उपस्थित थे ।

बीडीए कॉलोनी में हुआ सोसाइटी समिति के गठन

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। वीडीए कॉलोनी (ऐधे रोड) बड़ा लालपुर में सभी कॉलोनी वासियो ने अपनी स्वयं की सोसायटी समिति का गठन किया जिसका उद्देश्य कॉलोनी की सुरक्षा सुविधा संस्कार को आधुनिक बनाने का है सोसायटी समिति के गठन के बाद कॉलोनी में परिचर्चा हाल ,अपनी निजी ट्यूबेल, निजी सफाईकर्मी, सुरक्षा गार्ड ,सीसी टीबी कैमरा आदि की सुविधाओं को नियमित रूप से रखने का प्रयास किया जाएगा सर्व सम्मत से चुने जाने वाले पदाधिकारियों के नाम अध्यक्ष शिशु कुमार ,उपाध्यक्ष आलोक सिंह, वरिष्ठ उपाध्यक्ष- अभिषेक सिंह,सचिव - हरिश्चंद्र सिंह,संयुक्त सचिव - संदीप श्रीवास्तव ,कोषाध्यक्ष - कमलेश यादव , सहकोषाध्यक्ष श्री रामाशीष मिश्रा,संगठन मंत्री- श्री अभिषेक सिंह गोपू ,वरिष्ठ संगठन मंत्री -श्री नंद लाल सिंह ,लेखा परीक्षक श्री रमेश यादव ,सांस्कृतिक मंत्री --श्री संजय सिंह ,बिधि सलाहकार-श्री मती रचना मिश्रा , बिधि सलाहकार श्रीमती ममता सिंह शामिल है।

गेहूं खरीद बन्द होने पर भड़के कांग्रेसी दस जुलाई तक तिथि बढ़ाने की मांग की

प्रखर जखनियां गाजीपुर । स्थानीय तहसील मुख्यालय पर मंगलवार को मार्केटिंग गेहूं क्रय केंद्र पर कांग्रेस पार्टी के ब्लॉक अध्यक्ष नारायण सिंह की अध्यक्षता में शासन द्वारा किसानों की गेहूं खरीद बंद करने के विरोध में क्रय केंद्र पर कार्यकताओं के साथ धरना प्रदर्शन कर नारेबाजी की । देव नारायण सिंह ने कहा कि शासन द्वारा क्रय केंद्र का ऑनलाइन पंजीकरण बंद करने से किसानों को अपनी उपज का गेहूं बिक्रय करने में काफी परेशानी का सामना करना पड़ेगा । बताया कि शासन द्वारा 15 जून के बाद बिना सूचना दिए क्रय केंद्र पर गेहू खरीद बंद कर दिया गया ।बाद में तिथि बढ़ाकर 22जून किया गया मगर मशीन की गड़बड़ी के चलते समस्या का समाधान नहीं निकला। इन्होंने 10 जुलाई तक गेहूं क्रय केंद्र चालू रखने की मांग की। जिससे किसानों को अपनी उपज गेहूं सरकारी दाम देकर लाभ मिल सके । चेताया की क्रयकेंद्र चालू नहीं होने पर पार्टी कार्यकताओं के साथ धरना प्रदर्शन करेंगे । विपणन अधिकारी संजय कुमार ने बताया कि शासन द्वारा 16 जून को केंद्र पर आए किसानों के गेहूं की खरीद नहीं होने पर वापस जाना पड़ा था। जिनकी खरीद 22 जून को 10 किसानों का 270 कुंतल गेहूं खरीदा गया। आगे खरीद करने के लिए शासन के आदेश पर ही खरीद की जा सकती है। बताया कि 1 अप्रैल से क्रय केंद्र पर लक्ष्य के अनुसार 17549 कुंतल गेहूं 397 किसानों के माध्यम से क्रय किया गया है। प्रदर्शन में देव नारायण सिंह अनिल कुमार सिंह धर्मेंद्र चतुवेर्दी मोहन राजभर अरुण कुमार लाल सूर्यभान सिंह रामवृक्ष गिरी सहित दर्जनों कार्यकर्ता मौजूद रहे ।

ग्रामीणों ने रोजगार सेवक का जमकर किया विरोध

भ्रष्टाचार गलत कार्यों में लिप्त रोजगार सेवक प्रतिनिधि राम दवन पाल का ग्रामीणों ने बहिष्कार कर तत्काल निलंबन की मांग की

प्रखर वाराणसी। रोहनिया आराजी लाइन ग्राम पंचायत देउरा की खुली बैठक कापरेटिव पर संपन्न हुआ। गांव की पहली खुली बैठक की अध्यक्षता ग्राम विकास अधिकारी शैलेंद्र सोनकर व नवनिर्वाचित ग्राम प्रधान सीमा देवी की अगुवाई में सुनिश्चित किया गया। देऊरा गांव की ग्राम प्रधान सीमा देवी द्वारा खुली बैठक में सभी ग्रामीणों को आमंत्रित किया गया था जिसमें वह अपनी समस्या और विकास से जुड़े मुद्दों को रख सके। ग्रामीणों ने नवनिर्वाचित ग्राम प्रधान के सामने गांव की छोटी-बड़ी समस्याओं को रखा और बैठक के दौरान ही रोजगार सेवक गीता देवी के खिलाफ नारेबाजी करने लगे और आरोप लगाया कि जब से गीता देवी रोजगार सेवक बनी है तभी से इनके ससुर राम दवन पाल रोजगार सेवक का कार्य करते हैं और मनरेगा मजदूरों का आए दिन शोषण करने के साथ-साथ फर्जी हाजिरी बनाना,भूतपूर्व प्रधान के साथ मिलीभगत करके शौचालय निर्माण में गमन करना,ग्रामीण लोगों से आए दिन मारपीट करना,किसी भी सरकारी योजना कि गलत सूचना ग्रामीणों को देकर पैसे वसूली करने जैसे कृत्य कार्यों में लिप्त है। मिली जानकारी के अनुसार रोजगार सेवक प्रतिनिधि राम दवन पाल के इन्हीं कृत कार्यों की वजह से गांव में अशांति का माहौल रहता है और आए दिन गांव में विवाद झगड़ा झंझट जैसी स्थिति बनी रहती है जिसको लेकर ग्रामीणों में आक्रोश है। बैठक में ग्रामीणों ने यह भी चेतावनी दे डाली कि अगर जल्द से जल्द रोजगार सेवक न बदला गया तो हम सभी ग्रामीण मिलकर जिला अधिकारी के यहां धरना प्रदर्शन देंगे। वहीं दूसरी तरफ मामले की गंभीरता को देखते हुए ग्राम प्रधान प्रतिनिधि अमरनाथ राठौर ने ग्रामीणों को आश्वासन देते हुए रोजगार सेवक के ऊपर वैधानिक कार्यवाही करने की बात कही। बैठक में शामिल प्रधान प्रतिनिधि अमरनाथ राठौर,शैलेन्द्र पांडेय,अजीत कुमार,वीरेंद्र प्रताप निगम,रामदुलार राम,भरोस गुप्ता,आरिफ अहमद के अलावा सैकड़ों की जनसंख्या में ग्रामीण उपस्थित रहे।

सरदार सेना मनाएगी शाहूजी महाराज की जयंती समारोह

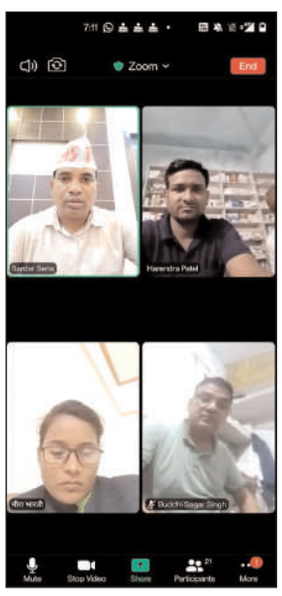

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। सरदार सेना सामाजिक संगठन के उत्तर प्रदेश कोर कमेटी के प्रमुख पदाधिकारियों का मंगलवार को सरादार सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष की अध्यक्षता में आगामी 26 जून 2021 को आरक्षण के जनक, वंचितों के नायक छत्रपति शाहूजी महाराज की जयंती समारोह को लेकर जूम एप के माध्यम से संपन्न हुई। बता दें कि राष्ट्रीय अध्यक्ष ने प्रदेश भर के प्रमुख पदाधिकारियों को विधानसभा स्तर पर जयंती समारोह मनाने का निर्देश दिया गया। कार्यकताओं ने आरक्षण के जनक कोल्हापुर नरेश छत्रपति शाहूजी महाराज की जयंती हर्षोल्लास के साथ मनाने का संकल्प लिया उन्होंने कहा कि छत्रपति शाहू ने जाति-पांति, छूआ-छूत व अन्य सामाजिक बुराईयों को दूर कर समाज में सभी को समानता का अधिकार दिया उन्होंने निम्न जाति हेतु सरकारी नौकरियों में आरक्षण प्रणाली लागू की। इन्हें बहुजन समाज का महान समाज सुधारक भी माना जाता है। सरदार सेना के कार्यकताओं ने संकल्प लिया कि अपने महापुरुष के बताए हुए रास्ते पर चलते हुए संगठन को फौलादी स्तर पर मजबूत बनाएंगे।

संक्षिप्त खबरें

स्वास्थ को सुधारने का सरल उपाय भी है योग - शशांक सिंह

प्रखर गाजीपुर। अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा युवा मरदह ब्लॉक के मीडिया प्रभारी शशांक सिंह ने कहा कि अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस प्रत्येक वर्ष 21 जून को मनाया जाता है। प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने ही इस दिन को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाने का प्रस्ताव दिया था। योग का अभ्यास एक बेहतर इंसान बनने के साथ एक तेज दिमाग, स्वस्थ दिल और एक सुकून भरे शरीर को पाने के तरीकों में से एक है। योग अपने अद्भुत स्वास्थ्य लाभों के लिए जाना जाता है। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2015 में आरंभ होने के बाद, हर साल 21 जून को मनाया जाता है। यह हमारे जीवन में इस प्राचीन भारतीय कला को अनमोल करने के महत्व पर बल देने का एक महान प्रयास है। वर्तमान समय में बहुत ज्यादे संख्या में लोग निरोग रहने के लिए प्रतिदिन योग करते है और सबसे बड़ी बात की इस वैश्विक महामारी में बचने के लिए शरीर की इम्युनिटी बढ़ाने के लिए योग बहुत ही सहायक है। योग, मन, शरीर और आत्मा की एकता को सक्षम बनाता है। योग के विभिन्न रूपों से हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को अलग-अलग तरीकों से लाभ मिलता है। 21 जून को मनाया जाने वाला अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस प्राचीन भारतीय कला के लिए एक अनुष्ठान है। हमारे दैनिक जीवन में योग को जन्म देने से हमारे जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आ सकता है। यह हमारे तनावपूर्ण जीवन के लिए एक बड़ी राहत प्रदान करता है। आइए हम प्रतिदिन अपने जीवन मे योग को अपनाए और अपना जीवन स्वस्थ और सुरक्षित बनाएं।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर मलिन बस्तियों में योग का अभियान स्वदेश सेवा संस्थान द्वारा चलाया गया

प्रखर प्रयागराज। स्वदेश सेवा संस्थान द्वारा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर बस्तियों के बच्चों और उनके माता- पिता को योग कराया गया साथ ही बच्चों को सूर्यनमस्कार सिखाया गया।स्वदेश सेवा संस्थान से प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से 300 लोग जुड़कर इस कार्यक्रम में भाग लिया । यह कार्यक्रम प्रयागराज के बड़ा बघाड़ा के पार्क में संपन्न हुआ । बच्चों को योगाभ्यास देव रत्न ने कराया साथ ही कार्यक्रम को सफल बनाने में सौरभ, पंकज, अरुण, सूरज, सचिन, शिवम, आलोक व रंजीत की उपस्थिति रही।

हजारों हिन्दुओं का धर्म परिवर्तन करवाने वाले दोनों आरोपी को फांसी देने की मांग

प्रखर वाराणसी। यूपी के नोएडा में धर्मांतरण कराने वाले रैकेट का भंडाफोड़ हुआ,एटीएस ने धर्म परिवर्तन कराने वाले दो मौलानाओं को गिरफ्तार किया है. इन दोनों पर अब तक हजारों हिन्दुओं का धर्मांतरण कराने का आरोप है. इस मामले में पुलिस ने विदेश से फंडिंग होने का शक भी जताया है जिसके बाद राष्ट्रीय हिन्दू दल अध्यक्ष हिन्दू नेता रोशन पाण्डेय ने धर्मांतरण कराने वाले मुख्य दोनों आरोपी मोहम्मद उमर गौतम एवं मुफ्ती काजी जहांगीर कासमी की फांसी की सजा देने की मांग किया। रोशन पाण्डेय ने कहा कि इन दोनों को फांसी की सजा दी जाए साथ ही इसमें संलिप्त हजारों लोगों पर रासुका लगाया जाएं इसके पीछे बहुत बड़ी गिरोह काम कर रही है जिसका जांच कर बड़ी कार्यवाही होनी चाहिए,रोशन पाण्डेय ने कहा ये कोई छोटा मामला नहीं है देशभर में ऐसे हजारों धर्मांतरण के रैकेट चलाएं जा रहे जिसमें इस्लामिक और इसाई मिशनरी दोनों काम कर रहे हैं और इसके लिए विदेशों से भारी फंडिंग होती हैं जिसे समय रहते काबू में नहीं किया गया तो देश एवं हिंदुओं के लिए ये घातक सिद्ध होगा। रोशन पाण्डेय ने कहा कि बहुत जल्द राष्ट्रीय हिन्दू दल द्वारा देश भर में धर्मांतरण कराने वाले गिरोह का सर्च ऑपरेशन चलाया जाएगा।

राष्ट्रीय हिन्दू दल अध्यक्ष हिन्दू नेता रोशन पाण्डेय ने प्रधानमंत्री एवं गृहमंत्री से फांसी देने की मांग किया

सार्थक सेवा फाउंडेशन के सदस्यों ने योग दिवस पर घर पर ही किया योग

प्रखर पुर्वांचल वाराणसी। सार्थक सेवा फाउंडेशन की तरफ से अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर सामाजिक दूरी का पालन करते हुए संस्था के सदस्यों ने बच्चों के साथ मिलकर योगा किया और योग करने के अनगिनत फायदे बताएं। संस्था की अध्यक्ष पूजा गिरी एवं महामंत्री सुनीता गुप्ता ने बताया की योग करने से हमारे जीवन में नई ऊर्जा का संचार होता है नियमित योग से मन शांत और आत्मबल बढ़ता है।योग से शरीर निरोग रहता है।संस्था की सदस्य,पूनम पांडे,प्रिया राजपूत, दिव्यंका गुप्ता,उषा गुप्ता,अमन गुप्ता इत्यादि ने परिवार के सदस्यों के साथ योग किया।

प्रखर पूर्वांचल

RNIUPHIN/2016/68754

मुद्रक प्रकाशक 'पंकज सिंह' के लिए सम्पादक 'अरूण सिंह' द्वारा 'गायत्री प्रिंटिंग प्रेस' सकलेनाबाद नियर दुर्गा चौक, गाजीपुर पिन कोडः 233001 से छपवाकर कनेरी गाजीपुर से प्रकाशित

सम्पादकीय कार्यालयः 9/10, टैगोर मार्केट, कचहरी, गाजीपुर पिन कोडः 233001

सम्पर्क सूत्रः 0548-2223833, +91-8858563779 +91-9450208067, +91-9452844802

सभी विवाद गाजीपुर न्यायालय के अधीन होगें।

ताजा खबर पढ़ने के लिए लॉगइन करें हमारी वेबसाइट
https://prakharpurvanchal.com
Email ID: prakharpurvanchal@gmail.com

सांध्य दैनिक प्रखर पूर्वांचल अखबार के सभी पद अवैतनिक हैं